तौबा की अहमीयत

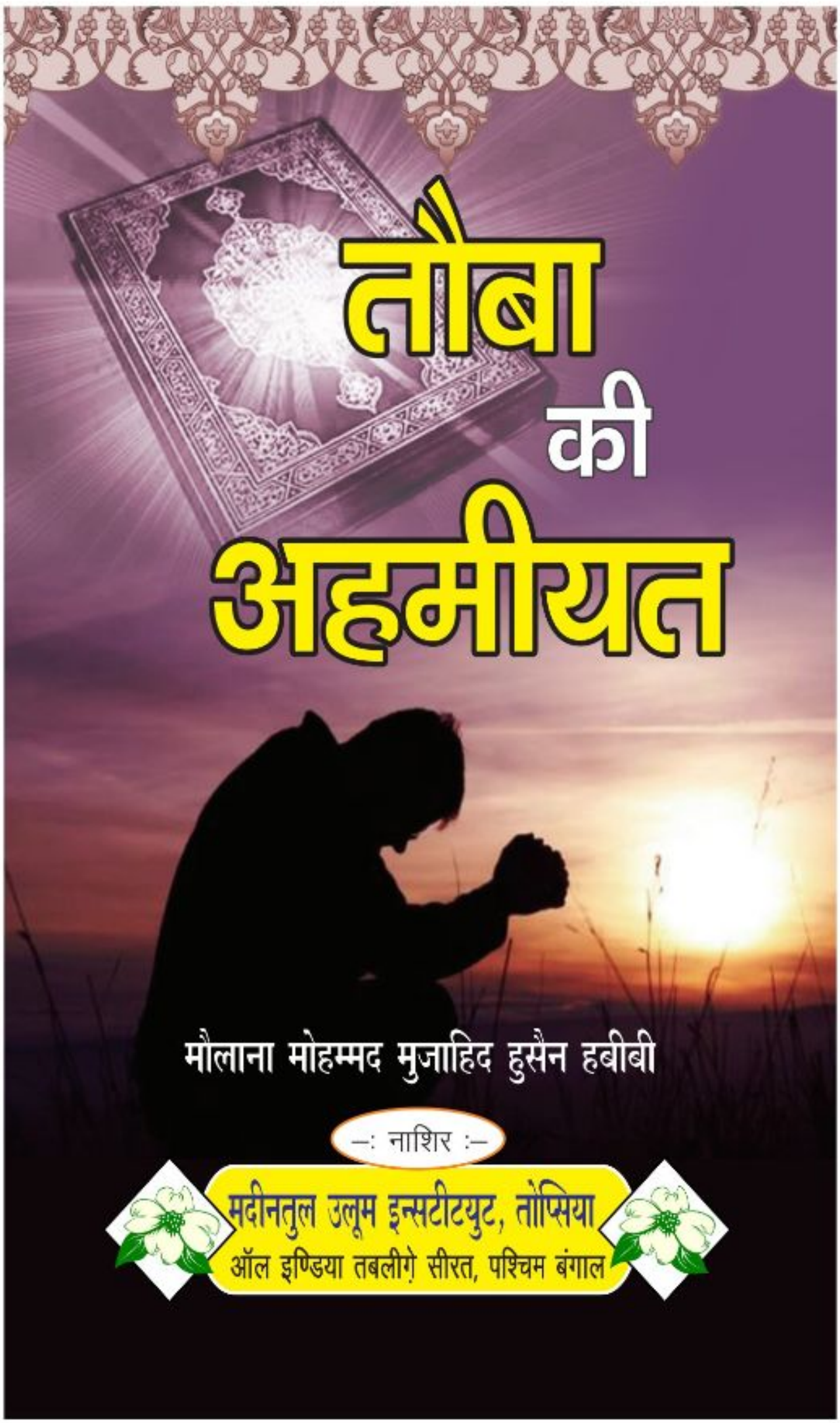

मौलाना मोहम्मद मुजाहिद हुसैन हबीबी

—: नाशिर :—

मदीनतुल उलूम इन्सटीटयुट, तोप्सिया
ऑल इण्डिया तबलीग़े सीरत, पश्चिम बंगाल

Scanned with CamScanner

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

कुरआनो ह़दीस़ और वाक़ियात की रोशनी में तौबा की अहमियत, फ़ज़ीलत और उसकी ज़रूरत को उजागर करने वाली एक शानदार तह़रीर

तौबा की अहमियत

मौलाना मुह़म्मद मुजाहिद हुसैन ह़बीबी
ऑल इण्डिया तब्लीग़े सीरत, कोलकाता

हिन्दी

मुग़ीस़ अह़मद ख़ान क़ादिरी
अमेठी (यू0 पी0)

नाशिर

मदीनतुल उ़लूम इन्स्टीट्यूट, तोपसिया
ऑल इण्डिया तब्लीग़े सीरत, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
6 तालतला लेन, कलकत्ता–14 Mob.: +91 9830367155

Rs. 40/-

Scanned with CamScanner

S. No.	Title	Page
1	अपनी बात	4
2	तौबा कुरआन में	6
3	तौबा व इस्तिग़फ़ार अहादीस़ की रोशनी में	10
4	इस्तिग़फ़ार से दिल की ग़फ़लत का दूर होना	11
5	गुनाह का इक़रार तौबा की सबसे पहली शर्त है	11
6	बार–बार गुनाह की बार–बार तौबा	11
7	शिर्क के अ़लावा तमाम गुनाहों की बख़्शिश	13
8	बेहतरीन इन्सान कौन?	13
9	अल्लाह तआ़ला बन्दे की तौबा का मुन्तज़िर रहता है	14
10	तौबा करने वाला गुनाह न करने वाले की तरह़ है	14
11	जब तक हम इस्तिग़फ़ार करेंगे अल्लाह मग़फ़िरत फ़रमाता रहेगा	15
12	इस्तिग़फ़ार हर ग़म और परेशानी से निजात का ज़रिया है	15
13	गुनाह की तारीकी और उसकी सफ़ाई	16
14	गुनाह पर अफ़सोस करने से भी माफ़ी मिल जाती है	16
15	मख़फ़ी (छुपे) और एलानिया (खुले) गुनाहों की तौबा	17
16	गुनाह कब तक नहीं लिखा जाता?	17
17	गुनाह का कफ़्फ़ारा	18
18	तौबा का कमाल	19
19	ख़ौफ़े ख़ुदा से बख़्शिश	19
20	तौबा में टाल–मटोल	20
21	गुनाह से दिल पर ज़ंग आता और तौबा से दिल मुनव्वर होता है!	22
22	चालीस साल की उ़म्र वाले के लिये नसीह़त	22
23	हर शख़्स को मोह़लत नहीं मिलती	22
24	रह़मते ख़ुदावन्दी की वुसअ़त	23
25	अल्लाह बन्दों पर माँ से भी ज़्यादा मेहरबान है	23
26	बग़ैर तौबा व इस्तिग़फ़ार बख़्शिश नहीं होगी	25
27	अल्लाह और बन्दे के दरमियान कोई चीज़ रुकावट नहीं बन सकती	26
28	अल्लाह की रह़मत बड़ी है	26
29	कबीरा और सग़ीरा दोनों गुनाहों से तौबा ज़रुरी है	26
30	तौबा करने वाला जवान अल्लाह का मह़बूब है	27

Scanned with CamScanner

31	तौबा की बरकत	28
32	तौबा का दरवाज़ा खुला है	29
33	तौबा का दरवाज़ा कब बन्द होगा?	29
34	तौबा कब तक क़ुबूल होती है?	30
35	सआ़दतमन्द (ख़ुशनसीब) इन्सान	30
36	तौबा क्या है?	31
37	तौबा की रुह़	32
38	ताइब (तौबा करने वाले) की पहचान	32
39	तौबा की क़िस्में	33
40	तौबा के बाद गुनाह का इर्तिकाब	34
41	क़साब की तौबा	35
42	बनी इसराईल के एक नौजवान की तौबा	36
43	औ़रत की मुह़ब्बत में मुब्तला नौजवान की तौबा	37
44	कफ़ल की तौबा	38
45	एक फ़ाह़िशा (बदकार औ़रत) की तौबा	39
46	एक गुनहगार की तौबा	41
47	एक दर्दअंगेज़ तौबा	43
48	सौ आदमियों के क़ातिल की तौबा	44
49	एक जवान की तौबा	46
50	ह़ज़रत ह़बीब अ़जमी की तौबा	47
51	ह़ज़रत मालिक बिन दीनार की तौबा	49
52	अ़ब्बासी शहज़ादे की तौबा	52
53	ह़ज़रत फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ की तौबा	56
54	गुनाहों से बचने का अनोखा नुस्ख़ा	58
55	किसी को दोज़ख़ी न कहिये	60
56	तौबा व इस्तिग़फ़ार की मक़बूल दुआ़एँ	61
57	सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार	63
58	जन्नत का अनमोल ख़ज़ाना	64
59	अल्लाह के पसन्दीदा कलिमात	64

Scanned with CamScanner

अपनी बात

मुस्लिम समाज सुधार और नई नस्ल की रहनुमाई के लिये तह़रीक ऑल इण्डिया तब्लीग़े सीरत एक अ़ज़ीम मन्सूबे के तह़त पिछले कई बरसों से फ़ाइदेमंद और कारआमद किताबें वक़्तन–फ़–वक़्तन छापती आ रही है। इस वक़्त तौबा के मौज़ू पर एक मुख़्तसर सी किताब बनाम "तौबा की अहमियत" आपके हाथों में है। किताब अगरचे मुख़्तसर है लेकिन क़ीमती मालूमात पर मुश्तमिल है। दरअस्ल इस मौज़ू पर कुछ लिखने का इरादा इसलिये हुआ कि कई लोगों से बातचीत के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि ये लोग अपने गुनाहों को बड़ा और संगीन समझकर अल्लाह की रह़मत से किसी ह़द तक ना–उम्मीद हो चुके हैं और ये समझ बैठे हैं कि जहन्नम और अ़ज़ाबे इलाही ही अब उनका मुक़द्दर है इसलिये अब नेकी का कोई फ़ाइदा नहीं। ह़ालाँकि ये बात सरासर इस्लामी नज़रिये के ख़िलाफ़ है। क़ुरआने पाक में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि:

وَلَا تَايْئَسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِنَّهٗ لَا يَايْئَسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ [1]

तर्जमाः और अल्लाह की रह़मत से मायूस न हो बेशक अल्लाह की रह़मत से ना–उम्मीद नहीं होते मगर काफ़िर लोग।

[1] पाराः 13, सूर–ए–यूसुफ़, आयतः 87

Scanned with CamScanner

हदीस़ शरीफ़ में हुज़ूर ने भी फ़रमाया है कि अल्लाह की रह़मत से ना–उम्मीद होना काफ़िरों का काम है इसलिये मुसलमानों को ख़ुदा की ज़ात से किसी भी सूरत में ना–उम्मीद नहीं होना चाहिये कि गुनाहगारों के लिये जहन्नम और अ़ज़ाबे इलाही के अ़लावा कोई चारा नहीं, ऐसा नहीं है। अल्लाह ने ऐसे ही गुनाहगार बन्दों के लिये तौबा जैसी अ़ज़ीम नेमत और रह़मत बनाई है ताकि बन्दा तौबा के ज़रिये अपने साबिक़ा (हो चुके) गुनाहों को धोकर ख़ुद को साफ़ सुथरा करके रब को राज़ी करे और उससे क़रीब हो सके। अब अगर आप तौबा की अहमियत, उसकी क़द्रो मन्ज़िलत और ताइब (तौबा करने वाले) का मक़ाम औरपहले की उम्मत के ताइबीन (तौबा करने वालों) की तौबा के तअ़ल्लुक से कुछ जानना और पढ़ना चाहते हैं तो ज़रुर वरक़ उलटिये और दर्ज बातों से सबक़ और नसीह़त ह़ासिल करके अपनी और अह्ले ख़ाना (घर वालों) की इस्लाह़ (सुधार) की कोशिश कीजिये। दुआ़ है कि मौला तआ़ला इस किताब को मेरे और कारिईन (पढ़ने वालों) के लिये इस्लाह़ व बख़्शिश का ज़रिया बनाए। आमीन!

(मौलाना) **मुह़म्मद मुजाहिद हुसैन ह़बीबी**

नाएब सेक्रेट्रीः ऑल इण्डिया तब्लीग़े सीरत, पश्चिम बंगाल

18 रबीउ़ल अव्वल 1432 हिजरी / 12 फ़रवरी 2011 ई0

Scanned with CamScanner

तौबा कुरआन में

"तौबा" एक अ़ज़ीम दौलत और क़ीमती ख़ुदाई तोह़फ़ा है। इसके ज़रिये बन्दा अपनी बदआमालियों को धोकर अल्लाह तआ़ला का कुर्ब ह़ासिल कर सकता है। हर ज़माने में तौबा के ज़रिये गुनाहगारों ने भरपूर फ़ाइदा उठाया है, लेकिन जूँ जूँ क़ियामत क़रीब आती जा रही है इस नेमते ख़ुदावन्दी को लोग फ़रामोश करते (भूलते) जा रहे हैं और इन्तिहा दर्जे की ग़फ़लत बरत रहे हैं जबकि आज के लोगों को पिछले लोगों के मुक़ाबले तौबा की ज़्यादा ज़रुरत है क्योंकि आज पहले के मुक़ाबले गुनाह ज़्यादा आ़म है। कुरआने करीम को गहराई से पढ़ें तो अन्दाज़ा होगा कि अल्लाह तआ़ला ने तौबा की कितनी ताकीदें फ़रमाई हैं। इरशाद होता है:

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَ يُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ [2]

तर्जमा: बेशक अल्लाह तौबा करने वालों और पाक रहने वालों को पसन्द फ़रमाता है।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَ اَصْلَحُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ [3]

तर्जमा: हाँ! वो लोग जिन्होंने (गुनाह के बाद) तौबा कर लिया और अपनी इस्लाह़ कर ली तो अल्लाह बख़्शने वाला बड़ा मेहरबान है।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَ اَصْلَحُوْا وَ بَيَّنُوْا فَاُولٰٓئِكَ اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ وَ اَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ [4]

---

[2] पारा: 2, सूर–ए–बक़रा, आयत: 222

[3] पारा: 3, सूर–ए–आले इमरान, आयत: 89

Scanned with CamScanner

तर्जमाः हाँ! जो तौबा कर लें अपनी इस्लाह़ कर लें और ज़ाहिर कर दें तो ये वही लोग हैं जिनकी मैं तौबा कुबूल करता हूँ और बेशक मैं तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान हूँ।

وَتُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ [5]

तर्जमाः ऐ ईमान वालो! तुम सब अल्लाह के हुज़ूर तौबा करो ताकि फ़लाह़ (कामयाबी) पा सको।

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ

لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا [6]

तर्जमाः और जब वो अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ मह़बूब! तुम्हारे हुज़ूर ह़ाज़िर हों और फिर अल्लाह से माफ़ी चाहें और रसूल उनकी शफ़ाअ़त फ़रमाएँ तो ज़रुर अल्लाह को बहुत तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान पाएँगे।

وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا

لِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۚ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَ

هُمْ يَعْلَمُوْنَ [7]

तर्जमाः और जब वो कोई बे–ह़याई करें या अपनी जानों पर ज़ुल्म करें, अल्लाह को याद करके अपने गुनाहों की

---

[4] पाराः 2, सूर–ए–बक़रा, आयतः 160

[5] पाराः 18, सूर–ए–नूर, आयतः 31

[6] पाराः 5, सूर–ए–निसा, आयतः 64

[7] पाराः 4, सूर–ए–आले इमरान, आयतः 135

Scanned with CamScanner

माफ़ी चाहें और गुनाह को कौन बख़्शने वाला है सिवाए अल्लाह के? और अपने किये हुए पर जान बूझकर अड़ न जाएँ, ऐसे लोगों के लिये रब की तरफ़ से बख़्शिशें और जन्नतें हैं।

إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيقِ [8]

तर्जमाः बेशक जिन्होंने मुसलमान मर्दों और मुलसमान औ़रतों को अज़ीयत (तकलीफ़) दी फिर तौबा न की उनके लिये जहन्नम का अ़ज़ाब है और उनके लिये आग का अ़ज़ाब है।

قُلْ يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِن رَّحْمَةِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ [9]

तर्जमाः तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वो बन्दो जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की है अल्लाह की रह़मत से ना–उम्मीद न हो, बेशक अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है, बेशक वही बख़्शने वाला मेहरबान है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تُوبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يُكَفِّرَ عَنكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ [10]

---

[8] पाराः 30, सूर–ए–बुरुज, आयतः 10

[9] पाराः 24, सूर–ए–ज़ुमर, आयतः 53

[10] सूर–ए–तह़रीम, आयतः 8

Scanned with CamScanner

तर्जमाः ऐ ईमान वालो! अल्लाह की तरफ़ सच्ची तौबा करो, क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारी बुराइयों को मिटा दे और तुम्हें जन्नत में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें बहती हैं।

وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ [11]

तर्जमाः और जो तौबा न करें वही ज़ालिम हैं।

ज़िक्र की गई आयतों से ये नतीजे बरामद हो रहे हैं:

(1) अल्लाह तआ़ला तौबा करने वालों को पसन्द फ़रमाता है।

(2) जो तौबा करके अपनी इस्लाह़ कर लें अल्लाह उनके गुनाहों को बख़्श देता है।

(3) तौबा कामयाबी का ज़रिया है।

(4) तौबा करने वाला हुज़ूर नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अगर अल्लाह की बारगाह में वसीला बनाएगा तो अल्लाह तआ़ला उसकी तौबा ज़रुर कुबूल फ़रमाएगा।

(5) जिन्होंने फ़वाहि़श (बुरे काम) और मज़ालिम (ज़ुल्म) किया हो वो अल्लाह से तौबा और इस्तिग़फ़ार करते रहें और गुनाहों पर जान बूझकर डटे न रहें।

(6) जिन्होंने गुनाहों को अपनाकर अपनी जानों पर ज़ुल्म किया है वो अल्लाह की रह़मत से मायूस न हों, तौबा और इस्तिग़फ़ार करते रहें क्योंकि अल्लाह तआ़ला माफ़ फ़रमाने वाला है।

---

[11] पाराः 26, सूर–ए–हुजरात, आयतः 11

Scanned with CamScanner

(7) अह्ले ईमान को चाहिये कि अल्लाह के हुज़ूर सच्ची तौबा करें क्योंकि सच्ची तौबा की बरकत से अल्लाह तआ़ला गुनाहों को माफ़ फ़रमाकर बन्दे को जन्नत में दाख़िल फ़रमा देता है।

(8) तौबा और इस्तिग़फ़ार के बरकातो स़मरात (नतीजों) से वाक़िफ़ होने के बावुजूद जो तौबा न करे वो ज़ालिम है।

लिहाज़ा मुसलमानों को चाहिये कि अपनी ज़िन्दगी की सुबहो शाम ज़िक्र की गई आयतों और उसके पैग़ामों को नज़र में रखकर बसर करें।

ये चन्द एक वो कुरआनी इरशादात हैं जो हमें तौबा व इस्तिग़फ़ार और इस्लाहे अह़वाल (ह़ालात को सुधारने) के लिये सोचने की दावत दे रहे हैं। यूँही अह़ादीसे़ रसूल में भी तौबा की ताकीदें और ताइब (यानी तौबा करने वाले) के लिये बशारतें (ख़ुशख़बरियाँ) आई हैं। नीचे की सतरों में उन ईमानअफ़रोज़ (ईमान ताज़ा कर देने वाली) ह़दीसों को मुलाह़ज़ा फ़रमाएँ!

तौबा व इस्तिग़फ़ार अह़ादीस़ की रोशनी में

हुज़ूर का रोज़ाना सत्तर मर्तबा इस्तिग़फ़ार करना

ह़ज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अल्लाह की क़सम! मैं हर दिन सत्तर मर्तबा से ज़्यादा अल्लाह से मग़फ़िरत माँगता हूँ और उसकी बारगाह में तौबा करता हूँ।"[12]

[12] बुख़ारी शरीफ़, ह़दीसः 6307, सुनने इब्ने माजा, ह़दीसः 3948

Scanned with CamScanner

इस्तिग़फ़ार से दिल की ग़फ़लत का दूर होना

हज़रत अग़र अल–मुज़नी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "मेरे दिल पर पर्दा आता रहता है हालाँकि मैं दिन में सौ मर्तबा इस्तिग़फ़ार करता हूँ।"[13]

ज़िक्र की गई दोनों हदीसों से मालूम हुआ कि जब हुज़ूर नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मासूम होकर रोज़ाना सौ बार इस्तिग़फ़ार फ़रमाते हैं ताकि दिल पर दुनियावी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने में मसरुफ़ होने की वजह से ग़फ़लत का पर्दा न आ जाए तो हम गुनहगार होकर भी अगर तौबा व इस्तिग़फ़ार न करें तो हमारा क्या हाल होगा? हर शख़्स तौबा का हाजतमन्द है, लिहाज़ा सभों को चाहिये कि रोज़ाना कसरत से तौबा व इस्तिग़फ़ार किया करें।

गुनाह का इक़रार तौबा की सबसे पहली शर्त है

हज़रत आइशा रदियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "बन्दा जब गुनाह का इक़रार (हाँ) कर लेता है फिर तौबा करता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी तौबा कुबूल फ़रमा लेता है।"[14]

बार–बार गुनाह की बार–बार तौबा

हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "बन्दा जब कोई गुनाह कर लेता है फिर कहता है कि मौला! मैंने गुनाह कर लिया, मुझे माफ़ फ़रमा दे तो अल्लाह तआ़ला

---

[13] मुस्लिम शरीफ़, हदीसः 7032

[14] बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कातः पेजः 203

Scanned with CamScanner

फ़रमाता है: ''(मेरे फ़िरिश्तो! देखो) मेरा बन्दा जानता है कि उसका कोई ख़ुदा है जो गुनाह माफ़ करता है और उस पर मुआख़ज़ा (पकड़) भी करता है (तो गवाह रहना) मैंने इस बन्दे को बख़्श दिया।'' फिर जब तक अल्लाह चाहे वो आदमी गुनाह से रुका रहता है। उसके बाद फिर कोई गुनाह कर बैठता है और कहता है: ''ऐ अल्लाह! मैंने गुनाह कर लिया, मुझे बख़्श दे!'' तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है: ''मेरा बन्दा जानता है कि उसका कोई ख़ुदा है जो गुनाह बख़्श देता है और उस पर गिरफ़्त (पकड़) भी फ़रमाता है तो मैंने इस बन्दे को बख़्श दिया।'' फिर आदमी बचा रहता है जितना अल्लाह चाहे फिर गुनाह कर बैठता है और अ़र्ज़ करता है: ''ऐ अल्लाह! मैंने गुनाह कर लिया, मुझे माफ़ फ़रमा दे!'' तो अल्लाह फ़रमाता है: ''मेरा बन्दा जानता है कि उसका कोई रब है जो बख़्शता है और पकड़ भी लेता है लिहाज़ा मैंने अपने बन्दे को बख़्श दिया।'' फिर बन्दा ठहरा रहता है जितना अल्लाह चाहे फिर गुनाह कर बैठता है, अ़र्ज़ करता है: ''ऐ अल्लाह! मैंने गुनाह कर लिया, मुझे माफ़ फ़रमा!'' तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है: मेरा बन्दा जानता है कि उसका कोई रब है जो बख़्शता है और पकड़ भी लेता है। मैंने अपने बन्दे को बख़्श दिया, जो चाहे करे।[15]

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: ''इस्तिग़फ़ार कर लेने वाला गुनाह पर मुसिर (अड़ा रहने वाला) नहीं कहलाता अगरचे दिन में सत्तर बार गुनाह करे।''[16]

---

[15] मुस्लिम शरीफ़, ह़दीस़: 7162

[16] तिर्मिज़ी शरीफ़, ह़दीस़: 3907, अबू दाऊद, ह़दीस़: 1516

Scanned with CamScanner

लेकिन शर्त ये है कि हर तौबा के वक़्त आइन्दा गुनाह न करने का अ़हद (इरादा) हो। अगर ऐसा होता है तो एक मरह़ला इन्शा अल्लाह ऐसा ज़रुर आएगा कि अल्लाह तआ़ला अपनी रह़मत से उसको गुनाह से बचा लेगा।

शिर्क के अ़लावा तमाम गुनाहों की बख़्शिश

ह़ज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः ऐ औलादे आदम! जब तक तू मुझसे दुआ़ माँगे और मुझसे आस लगाए रखे, मैं तुझे उ़यूब (गुनाहों) के बावुजूद बख़्शता रहूँगा, मैं बेनियाज़ हूँ। ऐ इब्ने आदम! अगर तेरे गुनाह आसमान के किनारे तक पहुँच जाएँ फिर तू मुझसे माफ़ी माँगे तब भी मैं तुझे बख़्श दूँगा, कुछ परवाह न करूँगा। ऐ इब्ने आदम! अगर तू ज़मीन भर ख़ताओं के साथ मिले मगर किसी को मेरा शरीक न ठहराता हो तो मैं ज़मीन भर बख़्शिश के साथ तेरे पास आऊँगा।"[17]

बेहतरीन इन्सान कौन?

ह़ज़रत अनस रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "हर इन्सान से ख़ता होती है और बेहतरीन ख़ताकार तौबा करने वाले हैं।[18]

यानी किसी से गुनाह हो जाना ये कोई बईद (दूर की) बात नहीं, बन्दा है तो गुनाह होगा ही। अलबत्ता गुनाह के

---

[17] तिर्मिज़ी शरीफ़, ह़दीसः 3885

[18] इब्ने माजा, ह़दीसः 4392, दारमी, ह़दीसः 2761

Scanned with CamScanner

बाद तौबा न करना बहुत बुरी बात है। लिहाज़ा सुबह़ और शाम कस़रत से तौबा करते रहना चाहिये।

अल्लाह तआ़ला बन्दे की तौबा का मुन्तज़िर रहता है

ह़ज़रत अबू मूसा अशअ़री रदियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः "अल्लाह तआ़ला रात के वक़्त अपने दस्ते कुदरत को फैलाता है ताकि दिन का गुनहगार तौबा कर ले इसी तरह़ वो अपना दस्ते कुदरत दिन के वक़्त भी फैलाता है ताकि रात का गुनहगार तौबा कर ले यहाँ तक कि सूरज मग़रिब (पश्चिम) से निकल आए।[19]

बड़ी शर्म की बात है कि अल्लाह तआ़ला तो रात दिन हमारी तौबा कुबूल करने के लिये तैयार है लेकिन हम तौबा ही न करें।

तौबा करने वाला गुनाह न करने वाले की तरह़ है

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द और ह़ज़रत अबू सईद रदियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः "गुनाह से तौबा करने वाला उस शख़्स की तरह़ हो जाता है जिसका कोई गुनाह न हो।"[20]

अल्लाह अल्लाह! इससे बढ़कर गुनाहगारों के लिये बशारत की बात और क्या हो सकती है।

---

[19] मुस्लिम शरीफ़, ह़दीसः 7165

[20] इब्ने माजा, ह़दीसः 4391, कन्ज़ुल उ़म्माल, ह़दीसः 10149

Scanned with CamScanner

जब तक हम इस्तिग़फ़ार करेंगे अल्लाह मग़फ़िरत फ़रमाता रहेगा

हज़रत अबू सईद रदियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि शैतान ने कहाः ''ऐ अल्लाह! तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम! मैं तेरे बन्दों को उस वक़्त तक बहकाऊँगा जब तक उनकी जानें उनके जिस्मों में होंगी।'' अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमायाः ''मुझे अपनी इ़ज़्ज़त और बुलन्दी–ए–दरजात की क़सम! मैं उन्हें बख़्शता रहूँगा जब तक वो मुझसे माफ़ी माँगते रहेंगे।''[21]

लोगो! जब हम गुनाह की नहूसत नहीं छोड़ सकते तो हमें तौबा की ह़लावत (मिठास) भी नहीं छोड़नी चाहिये क्योंकि ये गुनाहों को धुलने और अल्लाह को राज़ी करने का बेहतरीन ज़रिया है।

इस्तिग़फ़ार हर ग़म और परेशानी से नजात का ज़रिया है

ह़ज़रत अ़ब्दुलाह इब्ने अ़ब्बास रदियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जो इस्तिग़फ़ार को अपने ऊपर लाज़िम कर ले अल्लाह तआ़ला उसके लिये हर तंगी से छुटकारा और हर ग़म से नजात का रास्ता निकाल देगा और उसे वहाँ से रोज़ी देगा जहाँ उसका गुमान भी न हो।[22]

---

[21] मिश्कात शरीफ़, पेजः 204

[22] अबू दाऊद, ह़दीसः 1520, इब्ने माजा, ह़दीसः 3951

Scanned with CamScanner

गुनाह की तारीकी और उसकी सफ़ाई

हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः "बन्दा जब गुनाह करता है तो उसके दिल पर एक सियाह नुक़्ता पड़ जाता है अगर उसने गुनाह से हाथ खींच लिया और तौबा व इस्तिग़फ़ार कर लिया तो उसका दिल साफ़ हो जाता है और अगर बार बार गुनाह करता है तो सियाह नुक़्ता बढ़ता रहता है यहाँ तक कि उसके दिल पर सियाही चढ़ जाती है। यही वो ज़ंग है जिसका अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में ज़िक्र किया हैः

كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٤﴾ [23]

तर्जमाः ख़बरदार! उनके दिलों पर ज़ंग चढ़ गया है उन आमाल की वजह से जो वो करते थे।[24]

लिहाज़ा बन्दे को चाहिये कि गुनाह पर इसरार न करे (यानी अड़ा न रहे) हर हाल में तौबा व इस्तिग़फ़ार करता रहे ताकि दिलों की सफ़ाई का काम भी किसी हद तक होता रहे।

गुनाह पर अफ़सोस करने से भी माफ़ी मिल जाती है

हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः "आदमी जब कोई गुनाह कर लेता है फिर उस गुनाह को याद करके ग़मगीन हो जाता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी

---

[23] सूर–ए–मुतफ़्फ़िफ़ीन, आयतः 14

[24] इब्ने माजा, हदीसः 4385

Scanned with CamScanner

इस कैफ़ियत को मुलाहज़ा फ़रमाता है कि बन्दे को गुनाह ने मग़मूम (ग़मगीन) कर दिया तो उसका वो गुनाह बख़्श देता है जो उसने किया था इससे पहले कि वो कोई कफ़्फ़ारा अदा करे। गुनाह के बदले में न तो कोई नमाज़ काटता है और न कोई रोज़ा।''[25]

मख़फ़ी (छुपे) और एलानिया (खुले) गुनाहों की तौबा

हज़रत अ़ता बिन यसार रह़मतुल्लाहि अ़लैहि से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः ''जब तुम कोई गुनाह कर बैठो तो उसके साथ तौबा भी कर लिया करो, छुपे हुए गुनाहों की तौबा छुपकर करो और एलानिया गुनाहों की तौबा खुल्लमखुल्ला।[26]

छुपे गुनाहों की तौबा छुपकर करने में ह़िकमत ये है कि एक तरफ़ जहाँ अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करना गुनाह है ही वहीं गुनाह ज़ाहिर करना भी गुनाह है कि कहीं उसे सुनकर किसी और को गुनाह की ख़्वाहिश या जुरअत (हिम्मत) न हो जाए। इसलिये छुपे गुनाहों की तौबा छुपकर करने का हुक्म है और ज़ाहिरी गुनाहों की तौबा एलानिया करने में ह़िकमत ये है कि किसी को ताइब (तौबा करने वाले) के बारे में मज़ीद (और कोई) बदगुमानी न रहे।

गुनाह कब तक नहीं लिखा जाता?

हज़रत अबू उमामा बाहिली रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः ''बाएँ कंधे पर रहने वाला फ़िरिश्ता मुसलमान

---

[25] कन्ज़ुल उ़म्माल, ह़दीसः 10190

[26] कन्ज़ुल उ़म्माल, ह़दीसः 10248

Scanned with CamScanner

गुनाहगार से (उसके गुनाह करने के बाद) छः घड़ी अपने क़लम को रोके रखता है, अगर वो शर्मिन्दा हो जाए और अल्लाह तआ़ला से उस गुनाह की माफ़ी माँग ले तो उसको छोड़ दिया जाता है वरना एक गुनाह लिख लिया जाता है।[27]

ये अल्लाह तआ़ला की रह़मत है कि वो गुनाहगार को नाम–ए–आमाल में गुनाह लिखने से पहले कुछ वक़्त की मोहलत दे देता है ताकि शर्मिन्दगी का इज़हार करके अल्लाह से गुनाहों की माफ़ी माँग ले।

गुनाह का कफ़्फ़ारा

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रदियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः गुनाह का कफ़्फ़ारा ख़ुदा के सामने शर्मिन्दगी इख़्तियार करना है अगर तुम गुनाह न करते तो अल्लाह तआ़ला ऐसी क़ौम लाता जो गुनाह करती फिर अल्लाह तआ़ला उसको माफ़ कर देता।[28]

अल्लाह तआ़ला को अपनी नाफ़रमानी पसन्द नहीं है मगर चूँकि ''ग़फ़्फ़ार व सत्तार'' (गुनाह को बहुत ज़्यादा बख़्शने और ऐब छुपाने वाला) उसके सिफ़ाती असमा (यानी ख़ूबियों वाले नाम) हैं तो इन सिफ़ात (ख़ूबियों) को ज़ाहिर करने के लिये वो गुनाहों की मग़फ़िरत फ़रमाता रहता है।

गुनाह दो क़िस्म के होते हैंः एक वो जो इन्सानी फ़ितरत से सरज़द हों, दूसरे वो जो ख़ुदा–ए–तआ़ला के मुक़ाबले और बग़ावत में सरज़द हों। इन्सानी कमज़ोरियों और

---

[27] कन्ज़ुल उ़म्माल, ह़दीसः 10192

[28] कन्ज़ुल उ़म्माल, ह़दीसः 10218

Scanned with CamScanner

नफ़्स के जज़्बात से जो छोटे मोटे गुनाह सरज़द होते हैं ज़िक्र की गई ह़दीसों में ऐसे ही गुनाहों की माफ़ी का ज़िक्र है, चाहे वो समन्दर की झाग के बराबर ही क्यों न हों वो बख़्श दिये जाएँगे और जो गुनाह और नाफ़रमानियाँ ख़ुदा से बग़ावत और मुक़ाबले की सूरत में इन्सान से ज़ाहिर होते हैं वो चाहे छोटे हों या बड़े वो माफ़ी के क़ाबिल नहीं होते। जैसेः कुफ़्र, शिर्क, इर्तिदाद (यानी इस्लाम से फिर जाना) ह़राम को ह़लाल बनाकर या ह़लाल को ह़राम बनाकर शआ़इरुल्लाह (अल्लाह की निशानियों) से बग़ावत करना वग़ैरा।

तौबा का कमाल

ह़ज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः अगर तुम इतने गुनाह करो कि तुम्हारे गुनाह आसमान तक पहुँच जाएँ फिर तौबा कर लो तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी तौबा कुबूल फ़रमा लेगा।[29]

यानी बन्दे को किसी भी ह़ाल में अल्लाह की ज़ात और उसकी रह़मत से मायूस नहीं होना चाहिये क्योंकि अल्लाह के लिये किसी को बख़्श देना कोई बड़ी बात नहीं है बशर्तेकि बन्दा सच्चे दिल से उसके हुज़ूर तौबा करे।

ख़ौफ़े ख़ुदा से बख़्शिश

ह़ज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "एक आदमी ने अपनी आख़िरत की बरबादी का बहुत सामान कर

[29] इब्ने माजा, ह़दीसः 4389, कन्ज़ुल उ़म्माल, ह़दीसः 10222

Scanned with CamScanner

लिया, जब उसकी मौत का वक़्त आया तो उसने अपनी बीवी, बच्चों को वसीयत की कि जब मैं मर जाऊँ तो मुझे जला देना फिर मुझे हवा में बिखेर देना। अल्लाह की क़सम! अगर मैं ख़ुदा–ए–क़ह्हार की गिरफ़्त में आ गया तो मुझे ऐसा अ़ज़ाब देगा कि ऐसा अ़ज़ाब अब तक किसी को नहीं दिया गया होगा।'' चुनान्चे उन्होंने वसीयत पर अ़मल किया। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः ''क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला उस शख़्स से फ़रमाएगाः ''तूने अपने साथ ऐसा क्यों क्या था?'' वो अ़र्ज़ करेगाः ''तेरे ख़ौफ़ की वजह से मैंने ऐसा किया था।'' अल्लाह तआ़ला बस इसी बात पर उसकी बख़्शिश फ़रमा देगा।''[30]

अल्लाह का ख़ौफ़ बड़ी नेमत है। जिसके दिल में अल्लाह का ख़ौफ़ होता है वो बड़े गुनाहों से बच जाता है और अगर गुनाह हो भी जाए तो जल्द ही तौबा की तौफ़ीक़ मिल जाती है। अल्लाह तआ़ला ख़ुद फ़रमाता हैः

وَ اَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى [31]

जो अल्लाह के हुज़ूर खड़ा होने से डरता है और अपने नफ़्स को गुनाहों से रोकता है ऐसों का ठिकाना जन्नत है।

तौबा में टाल–मटोल

ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन औफ़ रदियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने

[30] मुस्लिम, ह़दीसः 7156, इब्ने माजा, ह़दीसः 4396
[31] पाराः 30, सूर–ए–नाज़ियात, आयतः 40, 41

Scanned with CamScanner

इरशाद फ़रमायाः तसवीफ़ शैतान का शिआ़र (निशान) है जिसको वो मोमिनीन के दिलों में डालता रहता है।[32]

तसवीफ़ का मतलब है गुनाह छोड़ने में टाल–मटोल और तौबा में ताख़ीर (देरी) करना कि अभी ज़िन्दगी बहुत पड़ी है किसी और वक़्त तौबा कर लूँगा और गुनाह को छोड़ दूँगा। टाल–मटोल शैतान की तरफ़ से है, मुसलमानों को उसकी अ़य्यारी से होशियार रहना चाहिये क्योंकि मौत का कुछ पता नहीं किस वक़्त आ जाए? लिहाज़ा गुनाह हो जाए तो फ़ौरन तौबा कर लें अगर दोबारा मुब्तला हो गए तो दोबारा तौबा कर लेनी चाहिये। इसी तरह़ अगर शैतान तुम्हें गुनाह में उलझाकर पछाड़ देता है तो तुम भी उसके बाद तौबा करके उसको शर्मिन्दा कर दो इसलिये कि जब तुम में और शैतान में इसी तरह़ से आँख मिचौली रहेगी तो कोई बड़े नुक़सान का ख़तरा नहीं क्योंकि तुम गुनाह के साथ साथ तौबा करके उसको माफ़ करा चुके होगे। अगर कभी ऐसा हो गया कि फिर तौबा की तौफ़ीक़ न हुई तो वो एक गुनाह ही होगा, पिछले गुनाह तौबा की वजह से माफ़ हो चुके होंगे। लेकिन इस तरह़ से आदमी को आ़दत नहीं डालनी चाहिये और बड़े गुनाहों पर जुरअत भी नहीं करनी चाहिये कि वो इन्सान की हलाकत का सबब बनते हैं और छोटे गुनाहों की आ़दत पड़ जाए तो उनका मजमूआ़ भी कबीरा (बड़े गुनाह) को पहुँच जाता है। इसलिये सलामती का रास्ता यही है कि आदमी ख़ुद को शैतान से चौकस रखे और गुनाहों के क़रीब भी न भटके।

---

[32] कन्ज़ुल उ़म्माल, हिस्साः 4, ह़दीसः 10208

Scanned with CamScanner

गुनाह से दिल पर ज़ंग आता है और तौबा से दिल मुनव्वर होता है!

हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "मोमिन जब गुनाह करता है तो उसके दिल पर एक सियाह नुक़ता पड़ जाता है अगर तौबा कर ले और माफ़ी माँग ले तो उसका दिल रौशन हो जाता है और अगर गुनाह ज़्यादा करे तो सियाही (तारीकी) ज़्यादा हो जाती है यहाँ तक कि पूरे दिल पर छा जाती है।"[33]

चालीस साल की उ़म्र वाले के लिये नसीह़त

हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्ह–हू से रिवायत है, हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः "जब इन्सान की उ़म्र चालीस साल हो जाए तो उसके लिये लाज़िम है कि वो अल्लाह तआ़ला से डरे और उससे ख़ौफ़ खाए।"[34]

हर शख़्स को मोहलत नहीं मिलती

हज़रत जाबिर रदियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः ऐ आ़इशा! हर शख़्स को ढील नहीं दी जाती है।[35]

यानी इस ख़्वाबो ख़्याल में नहीं रहना चाहिये कि बाद में तौबा कर लूँगा। बहुत से लोगों को तौबा की तौफ़ीक़ नहीं

---

[33] इब्ने माजा, ह़दीसः 4385
[34] कन्जुल उ़म्माल, हिस्साः 4, ह़दीसः 10329
[35] कन्जुल उ़म्माल, हिस्साः 4, ह़दीसः 10378

Scanned with CamScanner

मिल पाती है इसलिये शुरु ही से गुनाहों से बचते रहना चाहिये।

रह़मते ख़ुदावन्दी की वुसअ़त

ह़ज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है, हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जब अल्लाह तआ़ला ने मख़लूक़ को पैदा किया उसी वक़्त अपने दस्ते कुदरत से अपने मुतअ़ल्लिक़ लिख दियाः ''बेशक मेरी रह़मत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब रहेगी।''[36]

अल्लाह बन्दों पर माँ से भी ज़्यादा मेहरबान है

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास कुछ क़ैदी आए तो क़ैदियों में एक औ़रत की छातियाँ दूध से छलक रही थीं और वो दौड़ रही थी। जब क़ैदियों में कोई बच्चा पाती उसे पकड़ती, अपने सीने से चिमटा लेती और उसे दूध पिला देती। तब हमसे नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः ''क्या तुम ये ख़्याल कर सकते हो कि ये औ़रत अपने बच्चे को आग में फेंक देगी?'' हमने अ़र्ज़ कियाः ''अगर वो फेंकने पर क़ादिर हो तब भी कभी नहीं फेंकेगी।'' आपने फ़रमायाः ''अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों पर उससे भी ज़्यादा मेहरबान है जिनती ये अपने बच्चे पर मेहरबान है।''[37]

इसी क़िस्म की दूसरी रिवायत सह़ाबी–ए–रसूल ह़ज़रत आमिर से है वो फ़रमाते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

---

[36] तिर्मिज़ीः 3888

[37] मुस्लिम, ह़दीसः 7154

Scanned with CamScanner

अ़लैहि व सल्लम के पास ह़ाज़िर थे कि एक शख़्स आया जो कम्बल ओढ़े हुए था, उसके हाथ में कोई चीज़ थी जिस पर कम्बल लिपटा था। अ़र्ज़ किया कि "या रसूलल्लाह! मैं एक झाड़ी के पास से गुज़रा तो मैंने उस झाड़ी में चिड़िया के चूज़ों की आवाज़ सुनी, मैंने उन्हें पकड़ लिया और अपने कम्बल में रख लिया, इतने में चूज़ों की माँ आ गई, वो मेरे सर पर चक्कर लगाने लगी, मैंने उसके सामने वो बच्चे खोल दिये, वो उन पर गिर पड़ी, मैंने उन सबको अपने कम्बल में लपेट लिया, वो सब मेरे साथ हैं। आपने फ़रमायाः उन्हें रख दो। मैंने उन्हें रख दिया, उनकी माँ उन्हें सीने से लगाए रही तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः क्या तुम इन चूज़ों की माँ की अपने बच्चों से इतनी मुह़ब्बत पर तअ़ज्जुब करते हो? उस ज़ात की क़सम जिसने मुझे ह़क़ के साथ भेजा है! अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों पर उससे भी ज़यादा मेहरबान है जितनी बच्चों की माँ बच्चों पर। इन्हें वापस ले जाओ और वहीं रख आओ जहाँ से पकड़ा है।[38]

इसी तरह़ की एक और रिवायत ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से है, आपने फ़रमाया कि हम किसी जिहाद में हुज़ूर नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ थे। एक क़ौम के क़रीब से गुज़रे और दरयाफ़्त फ़रमायाः "तुम कौन हो?" वो बोलेः "हम मुसलमान हैं।" एक औ़रत वहाँ हाँडी के नीचे आग जला रही थी जिसके साथ उसका बच्चा था, जब आग भड़ककर ऊँची होती औ़रत बच्चे को दूर हटा देती, वो नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई, बोलीः "क्या आप

[38] अबू दाऊद, ह़दीसः 3091

Scanned with CamScanner

रसूलुल्लाह हैं?'' आपने फ़रमायाः ''हाँ।'' वो बोलीः ''मेरे माँ बाप आप पर कुरबान हों! क्या अल्लाह अरह़मुर्राह़िमीन नहीं है?'' आपने फ़रमायाः ''हाँ! अल्लाह सबसे बड़ा रह़म फ़रमाने वाला है।'' फिर बोलीः ''क्या अल्लाह अपने बन्दों पर माँ से ज़्यादा मेहरबान नहीं?'' आपने फ़रमायाः ''हाँ'' तो बोलीः ''माँ तो अपने बच्चे को आग में नहीं डालती।'' इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सर झुका लिया, दोनों आँख मुबारक से आँसू जारी हो गए, फिर सरे मुबारक उठाकर फ़रमायाः ''अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों में सिर्फ़ सरकश (बदमाश) मुन्किर (कलिमा के इन्कार करने वाले) ही को सज़ा देगा जो अल्लाह तआ़ला से बग़ावत करे और ''लाइला–ह–इल्लल्लाह'' कहने से इन्कार करे।''[39]

लिहाज़ा लोगों को चाहिये कि सरकशी (बदमाशी) और ग़फ़लत में न पड़ें जहाँ तक हो सके गुनाहों से दूर रहें, तौबा व इस्तिग़फ़ार करते रहें और अल्लाह से रह़मत व मग़फ़िरत की उम्मीद रखें क्योंकि अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

बग़ैर तौबा व इस्तिग़फ़ार बख़्शिश नहीं होगी

हुज़ूर नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः ''जो अल्लाह तआ़ला से इस्तिग़फ़ार नहीं करता अल्लाह तआ़ला उसे नहीं बख़्शेगा और जो तौबा नहीं करता अल्लाह तआ़ला उसकी तौबा कुबूल नहीं फ़रमाएगा और जो रह़म नहीं करता अल्लाह तआ़ला भी उस पर रह़म नहीं फ़रमाएगा।''[40]

---

[39] इब्ने माजा, ह़दीसः 4438

[40] कन्ज़ुल उ़म्माल, ह़दीसः 10284

Scanned with CamScanner

अल्लाह और बन्दे के दरमियान कोई चीज़ रुकावट नहीं बन सकती

हुज़ूर नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः "जब इबलीस ने देखा कि आदम अ़लैहिस्सलाम के पुतले का अन्दुरुनी हिस्सा ख़ाली है तो उसने कहा कि ऐ अल्लाह! तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम! मैं इसके पेट से उस वक़्त तक नहीं निकलूँगा जब तक इसमें रुह़ रहेगी। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः "मुझे मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम! मेरे और बन्दे की तौबा के दरमियान तू रूकावट नहीं बन सकता जब तक बन्दे के जिस्म में रुह़ रहेगी।"[41]

अल्लाह की रह़मत बड़ी है

हुज़ूर नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने सह़ाबी ह़बीब बिन ह़ारिस़ से फ़रमायाः ऐ ह़बीब! जब कभी तुमसे गुनाह हो जाए तो तौबा कर लिया करो। ह़बीब ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! अगर मेरे गुनाह बहुत ज़्यादा हों तो मैं क्या करुँ? इस पर हुज़ूर ने फ़रमायाः अल्लाह की माफ़ी तुम्हारे गुनाहों से बढ़कर है।[42]

कबीरा और सग़ीरा दोनों गुनाहों से तौबा ज़रुरी है

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रदियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः कोई भी कबीरा (बड़ा) गुनाह तौबा व इस्तिग़फ़ार के बाद कबीरा नहीं रहता और कोई भी सग़ीरा (छोटा) गुनाह इसरार (बार बार करने) के बाद सग़ीरा नहीं रहता।[43]

---

[41] कन्जुल उ़म्माल, ह़दीसः 10269
[42] कन्जुल उ़म्माल, ह़दीसः 10247
[43] कन्जुल उ़म्माल, ह़दीसः 10238

Scanned with CamScanner

यानी कबीरा गुनाह के बाद अगर आदमी सच्चे दिल से तौबा करे तो उसका गुनाह माफ़ हो जाता है लेकिन अगर बन्दा लगातार सग़ीरा गुनाह किये जा रहा है और तौबा नहीं करता तो सग़ीरा गुनाहों पर इसरार (अड़े रहना), कबीरा गुनाह में बदल जाता है।

तौबा करने वाला जवान अल्लाह का मह़बूब है

ह़ज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः "बेशक अल्लाह तौबा करने वाले नौजवानों को मह़बूब रखता है।"[44]

एक और ह़दीस़ में है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः "कोई भी चीज़ अल्लाह तआ़ला के नज़दीक तौबा करने वाले नौजवान से बढ़कर पसन्दीदा नहीं और कोई भी चीज़ अल्लाह तआ़ला की बारगाह में इतनी ना–पसन्दीदा नहीं जितना कि वो बूढ़ा जो बुढ़ापे के बावुजूद गुनाहों पर अड़ा हुआ हो।"[45]

तौबा करने वाले तमाम लोगों से अल्लाह तआ़ला मुह़ब्बत फ़रमाता है लेकिन नौजवानी में तौबा करने वालों को ख़ास तौर से मह़बूब रखने की वजह ये है कि इस उ़म्र में तौबा करना ह़क़ीक़त में दिल गुर्दे का काम है क्योंकि इस उ़म्र में उ़मूमन आदमी ख़्वाहिशों व लज़्ज़तों के नरग़े में होता है ऐसे में ख़्वाहिशों और दुनियावी रंगीनियों को छोड़कर अल्लाह सुब्ह़ानहू व तआ़ला की तरफ़ लौटना ह़क़ीक़त में बड़े नसीबे की बात है।

---

[44] कन्ज़ुल उ़म्माल, 10185

[45] कन्ज़ुल उ़म्माल, ह़दीस़ः 10233

Scanned with CamScanner

तौबा की बरकत

हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता हैः मैं अपने बारे में बन्दे के गुमान के मुताबिक़ करता हूँ और मैं उसके साथ होता हूँ जब वो मुझे याद करता है और अल्लाह अपने बन्दे की तौबा पर उस शख़्स से भी ज़्यादा ख़ुश होता है जो अपना खोया हुआ जानवर चटियल मैदान में पा ले और जो एक बालिश्त मेरे क़रीब होता है मैं उससे एक गज़ क़रीब हो जाता हूँ और जो मुझसे एक गज़ क़रीब होता है मैं उससे दो गज़ क़रीब हो जाता हूँ और जब बन्दा मेरे पास चलकर आता है तो मैं दौड़कर उसके क़रीब हो जाता हूँ।[46]

हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जब बन्दा तौबा करता है तो अल्लाह तआ़ला उसके निगहबान फ़िरिश्तों को उसका गुनाह भुला देता है साथ ही उसके जिस्म के बाहरी हिस्सों और ज़मीन के उस हिस्से को भी उसका गुनाह भुला देता है जिस पर उसने गुनाह किया था यहाँ तक कि वो अल्लाह तआ़ला से इस हालत में मुलाक़ात करेगा कि उसके गुनाह पर कोई गवाह नहीं होगा।[47]

---

[46] मुस्लिम, हदीसः 7128

[47] कन्ज़ुल उ़म्माल, हदीसः 10179

Scanned with CamScanner

तौबा का दरवाज़ा खुला है

हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः ''जो सूरज के मग़रिब (पश्चिम) से निकलने से पहले तौबा करे अल्लाह तआ़ला उसकी तौबा कुबूल कर लेगा।''[48]

एक और रिवायत हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रदियल्लाहु अ़न्हु से है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः ''जन्नत के आठ दरवाज़े हैं, जिनमें से सात बन्द हैं लेकिन एक दरवाज़ा तौबा के लिये खुला हुआ है जब तक सूरज मग़रिब (पश्चिम) से तुलू (ज़ाहिर) न हो जाए।''[49]

तौबा का दरवाज़ा कब बन्द होगा?

हज़रत सफ़वान बिन अ़स्साल से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ''अल्लाह तआ़ला ने तौबा के लिये पश्चिम में एक दरवाज़ा बनाया है जिसकी चौड़ाई सत्तर साल की राह है, वो उस वक़्त तक बन्द न होगा जब तक सूरज मग़रिब से तुलू न हो जाए यही अल्लाह तआ़ला का इरशाद है। जिस दिन तुम्हारे रब की बाज़ निशानियाँ आएँगी तो किसी ऐसे नफ़्स को ईमान मुफ़ीद (फ़ाइदामन्द) न होगा जो पहले से ईमान न लाया हो।''[50]

---

[48] मुस्लिम शरीफ़, हदीसः 7036
[49] कन्ज़ुल उ़म्माल, हदीसः 10196
[50] मिश्कात, पेजः 205, कन्ज़ुल उ़म्माल, हिस्साः 4, हदीसः 10253

Scanned with CamScanner

तौबा कब तक कुबूल होती है?

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रदियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः "अल्लाह तआ़ला बन्दे की तौबा कुबूल करता रहता है जब तक कि वो मौत के ग़रग़रा की ह़ालत तक न पहुँचे।"[51]

ह़ालते नज़अ़ (जान निकलने की ह़ालत) में जब मौत के फ़िरिश्ते नज़र आने लगें इसे ग़रग़रे की कैफ़ियत (ह़ालत) कहते हैं। ग़रग़रे से पहले कुफ़्र से तौबा कुबूल हो सकती है लेकिन इसके बाद नहीं क्योंकि ईमान के लिये छुपी बातों पर ईमान लाना ज़रुरी है। अलबत्ता गुनाहों से तौबा उस वक़्त भी कुबूल है। उ़लमा ने फ़रमाया कि मलकुलमौत हर मरने वाले को नज़र आते हैं। क़ब्ज़े रुह (रूह़ क़ब्ज़ होना) पाँव की तरफ़ से शुरु होता है। इसमें मस्लह़त ये है कि इस ह़ालत में भी ज़ुबान और दिल चलते रहें और गुनहगार तौबा कर लें। ये भी अल्लाह तआ़ला की ग़फ़्फ़ारी (बख़्शिश) का एक नमूना है।

सआ़दतमन्द (ख़ुशनसीब) इन्सान

ह़ज़रत जाबिर रदियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः "इन्सान की सआ़दत में से एक ये है कि उसकी उ़म्र लम्बी हो और अल्लाह तआ़ला उसको अपनी तरफ़ मुतवज्जे होने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दे।"[52]

---

[51] तिर्मिज़ी, ह़दीसः 3880, इब्ने माजा, ह़दीस 4394

[52] कन्ज़ुल उ़म्माल, ह़दीसः 10201

Scanned with CamScanner

उ़म्र का ज़्यादा या कम होना ये किसी के इख़्तियार में नहीं है लेकिन तौबा व इस्तिग़फ़ार करना आदमी के अपने इख़्तियार में है और सआ़दतमन्दी की अ़लामतों (निशानियों) में से एक ये भी है कि आदमी की उ़म्र लम्बी हो और उसे अल्लाह की तरफ़ माएल होने की तौफ़ीक़ मिल जाए। इसलिये हर मुसलमान को चाहिये कि हर लम्हा तौबा व इस्तिग़फ़ार करता रहे।

अब तक आपने तौबा के तअ़ल्लुक़ से ह़दीसें पढ़ने की सआ़दतें ह़ासिल कीं, अब तौबा, तौबा की रुह, ताइब (यानी तौबा करने वाले) की पहचान और तौबा की क़ुबूलियत की अ़लामतें (निशानयाँ) तह़रीर की जा रही हैं ताकि पढ़ने वाले उनकी रोशनी में अपनी तौबा दुरुस्त कर सकें।

तौबा क्या है?

तौबा तीन चीज़ो का नाम है:

1. जब किसी से अल्लाह तआ़ला की ना–फ़रमानी और गुनाह का कोई काम हो जाए तो वो अपने गुनाह का इक़रार करे और शर्मिन्दा होकर फ़ौरी तौर पर उससे बाज़ आ जाए।

2. आइन्दा उन बुराईयों से बचे रहने का पक्का इरादा करे और शरीअ़त की राह पर गामज़न हो जाए।

3. पिछली ज़िन्दगी में की हुई ख़ताओं की माफ़ी चाहे और उनकी तलाफ़ी (भरपाई) करे।

हर गुनाह में अल्लाह तआ़ला की ना–फ़रमानी पाई जाती है लेकिन उसके साथ ही अगर किसी दूसरे शख़्स की ह़क़तल्फ़ी भी की गई हो (यानी दूसरे का ह़क़ मारा गया हो) तो उस शख़्स से माफ़ी माँग ले वरना तौबा सही नहीं होगी।

Scanned with CamScanner

तौबा की रुह़

सिर्फ़ ज़ुबान से तौबा करना और अस्तग़फ़िरुल्लाह कहते रहना जिसमें दिल शरीक न हो, फ़ाइदामन्द नहीं है, अगर बन्दा अपने किये हुए गुनाह पर शर्मिन्दा हो और अफ़सोस करे और इराद–ए–सादिक़ (सच्चा इरादा) नियते ख़ालिस (सच्ची नियत) और रग़बते कामिल (मुकम्मल तवज्जो) का तालिब हो तो यही वो इस्तिग़फ़ार है जिसके फ़ज़ाइल अल्लाह की किताब और अह़ादीसे रसूल में ज़िक्र हैं।

हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः ''नादिम (शर्मिन्दा) होना ही तौबा है।''

मालूम हुआ कि नदामत (शर्मिन्दगी) ही तौबा की जान है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इस फ़रमान के मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रत दातागंज बख़्श रह़मतुल्लाहि अ़लैहि (465 हिजरी) फ़रमाते हैं कि ये एक ऐसा क़ौल है जिसमें तौबा की तमाम शर्तें मौजूद हैं क्योंकि तौबा की पहली शर्त तो ख़ुदाई अह़काम की मुख़ालफ़त पर अफ़सोस करना है, दूसरी शर्त लग़ज़िश को फ़ौरन छोड़ देना है, तीसरी शर्त गुनाह की तरफ़ न लौटने का क़स्द (इरादा) करना है और ये तीनों शर्तें नदामत (शर्मिन्दगी) के साथ वाबस्ता हैं। क्योंकि जब दिल में किये हुए बुरे कामों पर नदामत पैदा होती है तो बाक़ी दो शर्तें उसके साथ ख़ुद–ब–ख़ुद आ जाती हैं। (कश्फ़ुल मह़जूबः हिजवेरी)

ताइब (तौबा करने वाले) की पहचान

तौबा करने वालों की शनाख़्त (पहचान) इन बातों से होती हैः

Scanned with CamScanner

अपनी ज़ुबान को क़ाबू में रखते हैं।

झूठ, ग़ीबत और बेहूदा बातों से अपने आपको बचाते हैं और ज़ुबान को ह़म्दो स़ना (यानी अल्लाहो रसूल की तारीफ़) और शुक्र में मशग़ूल रखते हैं।

किसी के मुतअ़ल्लिक़ दुश्मनी या ह़सद अपने दिल में नहीं रखते।

बुरे आदमियों से अलग रहते हैं ताकि कहीं वो उसको नेकी से मुन्ह़रिफ़ (अलग) न कर दें।

जिन बातों से तौबा मज़बूत होती है उन्हें हमेशा इख़्तियार करते हैं क्योंकि उसके बग़ैर तौबा कुबूल नहीं होती और जिन बातों से तौबा मुकम्मल होती है उनको दिल में ज़्यादा से ज़्यादा जगह देते हैं। मस़लनः ख़ौफ़, ह़या और उम्मीद, ये चीज़ें नियत को मज़बूत बनाती हैं। अल्लाह तआ़ला ने जिन कामों के करने से मना फ़रमाया है उनसे परहेज़ करते हैं, नफ़्से अ़म्मरा और नफ़सानी ख़्वाहिशों की पैरवी नहीं करते और अल्लाह तआ़ला की हुदूद (ह़दों) का ख़्याल करते हैं।

मौत के लिये हर वक़्त तैयार रहते हैं, गुनाह पर शर्मिन्दा रहते और अल्लाह की पूरी फ़रमाँबरदारी करते हैं।

तौबा की क़िस्में

तौबा की तीन किस्में हैं:

तौबा, गुनाह से नेकी की तरफ़: यानी जिन लोगों ने कोई बुरा काम किया या अपनी जानों पर ज़ुल्म किया फिर अल्लाह तआ़ला को याद करके अपने गुनाहों की माफ़ी माँग ली।

Scanned with CamScanner

तौबा, नेकी से ज़्यादा नेकी की तरफ़: ये हिम्मत वालों ख़ुसूसन औलिया अल्लाह के लिये ख़ास है क्योंकि वो गुनाह करते ही नहीं।

बुलन्द मक़ाम पर ठहरने से तौबा: उ़लमा बयान फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबी–ए–रह़मत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मक़ामात हमेशा तरक़्क़ी पर थे इसलिये आप जब किसी बुलन्द मक़ाम पर पहुँचते तो उससे नीचे के मक़ाम से इस्तिग़फ़ार करते और उस मक़ाम के देखने से भी तौबा फ़रमाते थे।

तौबा के बाद गुनाह करना

किसी गुनाह से तौबा करने के बाद अगर आदमी की नियत में फ़ुतूर आ जाए और फिर गुनाह की तरफ़ माएल हो जाए तो उसको पहली तौबा का स़वाब मिलेगा। ह़ज़रत दाता गंजबख़्श रह़मतुल्लाहि अ़लैहि ने अपनी किताब ''कश्फ़ुल मह़जूब'' में एक ऐसे बुज़ुर्ग का ज़िक्र फ़रमाया है जिन्होंने सत्तर बार तौबा की और फिर गुनाह की तरफ़ लौटे यहाँ तक कि इकहत्तरवीं बार इस्तिक़ामत (तौबा पर स़ाबितक़दमी) नसीब हुई।

एक और बुज़ुर्ग ने तौबा की और कुछ मुद्दत तक अपनी तौबा पर क़ाएम रहे फिर दिल में गुनाह की ख़्वाहिश पैदा हुई और ख़्वाहिश को पूरा किया लेकिन अब नदामत (शर्मिन्दगी) के मारे अपने शैख़ (पीर) के नज़दीक न जाते थे। एक दिन उनके पास चले गए तो उन्होंने नसीह़त फ़रमाई तो तौबा दुरुस्त हो गई।[53]

---

[53] कश्फ़ुल मह़जूब, पेज: 429

Scanned with CamScanner

अब तौबा की तरग़ीब के लिये चन्द हिकायात और वाक़ियात तहरीर किये जा रहे हैं ताकि उनके पढ़ने से तबीअ़त में ख़ुशगवार इन्क़िलाब पैदा हो और क़ारी (पढ़ने वाला) ख़ुद को तौबा के लिये आमादा कर सके।

क़स्साब की तौबा

क़ौमे बनी इसराईल का एक क़स्साब अपने पड़ौसी की कनीज़ (गुलाम लड़की) पर आ़शिक़ था। एक दिन कनीज़ किसी काम से दूसरे गाँव जा रही थी। क़स्साब ने मौक़ा ग़नीमत जानकर उसका पीछा किया और कुछ दूर जाकर उसको पकड़ लिया। कनीज़ ने कहाः ''ऐ नौजवान! मेरा दिल भी तेरी तरफ़ माएल है लेकिन मैं अल्लाह से डरती हूँ।'' क़स्साब ने जब अल्लाह का नाम सुना तो बोलाः ''जब तू अल्लाह से डरती है तो मैं क्यों न उससे डरुँ?'' ये कहकर उसने तौबा कर ली और वहाँ से पलट आया। रास्ते में प्यास के मारे जान लबों पर आ गई, इत्तिफ़ाक़ से उसकी मुलाक़ात एक आदमी से हो गई जो किसी नबी का क़ासिद था। उस क़ासिद ने ह़ाल दरयाफ़्त किया, उस क़स्साब ने जवाब दियाः ''प्यास से निढाल हूँ।'' क़ासिद ने कहा कि ''आओ हम दोनों मिलकर अल्लाह से दुआ़ करें ताकि अल्लाह तआ़ला अब्र (बादल) के फ़िरिश्ते को भेज दे और वो शहर पहुँचने तक हम पर साया किये रखे।'' नौजवान ने कहा कि ''मैंने तो अल्लाह तआ़ला की कोई क़ाबिले ज़िक्र इबादत नहीं की है, मैं किस तरह दुआ़ करुँ? तुम दुआ़ करो मैं आमीन कहूँगा।'' चुनान्चे क़ासिद ने दुआ़ की, बादल का एक टुकड़ा उनके सरों पर साया–फ़गन हो गया। जब ये दोनों रास्ता तय करते हुए एक

Scanned with CamScanner

दूसरे से जुदा हुए तो बादल क़स्साब के सर पर आ गया और क़ासिद धूप में हो गया। क़ासिद ने कहाः ''ऐ नौजवान! तूने तो कहा था कि मैंने अल्लाह की कुछ भी इबादत नहीं की है फिर ये बादल तेरे सर पर किस तरह साया–फ़गन हो गया है? मुझे अपना हाल बता।'' नौजवान ने कहाः ''और तो मुझे कुछ मालूम नहीं अलबत्ता एक कनीज़ से ख़ौफ़े ख़ुदा की बात सुनकर मैंने तौबा की थी।'' क़ासिद बोलाः ''तूने सच कहा, अल्लाह के हुज़ूर जो दर्जा तौबा करने वाले का है वो किसी दूसरे का नहीं है।''[54]

बनी इसराईल के एक नौजवान की तौबा

क़ौमे बनी इसराईल का एक नौजवान जिसने बीस साल तक अल्लाह की इबादत की फिर बीस साल ना–फ़रमानी की फिर आईना देखा तो दाढ़ी में बाल सफ़ेद नज़र आए। वो ग़मगीन हो गया और कहने लगाः ''ऐ मेरे ख़ुदा! मैंने बीस साल तेरी इबादत की और बीस साल तेरी ना–फ़रमानी की अब अगर मैं तेरी तरफ़ आऊँ तो क्या मेरी तौबा कुबूल होगी?'' उसने किसी कहने वाली की अवाज़ सुनी जो कह रहा थाः ''तूने हमसे मुहब्बत की, हमने तुझे महबूब बनाया। तूने हमें छोड़ दिया, हमने तुझे छोड़ दिया। तूने गुनाह किये, हमने तुझे मोहलत दी अगर तू तौबा करके हमारी तरफ़ आएगा तो हम तेरी तौबा कुबूल करेंगे।'' (मुकाशफ़तुल कुलूब)

[54] कितबुत्तव्वाबीन, पेजः 45

Scanned with CamScanner

औ़रत की मुह़ब्बत में मुब्तला नौजवान की तौबा

क़ौमे बनी इसराईल में दो दोस्त थे। ये दोनों एक पहाड़ पर अल्लाह की इ़बादत करते थे। एक मरतबा उनमें से एक शहर में कुछ ख़रीदने आया तो उसकी निगाह एक बाज़ारी औ़रत पर पड़ गई और वो उसके इ़श्क़ में गिरफ़्तार हो गया और उसकी मजलिस इख़्तियार कर ली। जब कुछ रोज़ गुज़र गए और वो वापस न हुआ तो दूसरा दोस्त उसे तलाश करता हुआ शहर पहुँचा, मालूमात करने पर उसके बारे में सब कुछ जान गया फिर ये उससे मिलने पहुँचा तो आ़शिक़ दोस्त ने शर्मिन्दा होकर कहाः "मैं तो तुझे जानता ही नहीं।" उसने उसकी बात को नज़रअन्दाज़ करते हुए कहाः "प्यारे भाई! दिल को इस काम में मशग़ूल न कर, मेरे दिल में जिस क़द्र शफ़क़त (मेहरबानी) आज तेरे लिये पैदा हुई है इससे पहले कभी नहीं हुई थी।" ये कहकर उसे अपने सीने से लगा लिया। गुनाहगार दोस्त ने जब अपने दोस्त की तरफ़ से मुह़ब्बत का इज़हार देखा तो जान लिया कि "मैं इसकी नज़रों से नहीं गिरा हूँ।" फ़ौरन तवाइफ़ की मह़फ़िल से उठा, तौबा की और उसके साथ वापस चला गया। (कीमिया–ए–सआ़दत)

ज़िक्र किये गए वाक़िये से मालूम हुआ कि वही नसीह़त कारगर होती है जो शफ़क़तो मुह़ब्बत के साथ की जाती है। लिहाज़ा नासेह़ (नसीह़त करने वाले) को चाहिये कि नसीह़त करते वक़्त बदअख़लाक़ी और सख़्ती से बचे ताकि नसीह़त कारगर हो सके।

Scanned with CamScanner

कफ़ल की तौबा

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रदियल्लाहु अ़न्हुमा फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना आप फ़रमा रहे थे कि कफ़ल बनी इसराईल में एक आदमी था जो हर तरह़ के गुनाह किया करता था। उसके पास एक मोह़ताज औ़रत आई उसे उसने ज़िना (अपने साथ लेटने) की शर्त पर साठ दीनार दिये। जब वो गुनाह के लिये बढ़ा तो औ़रत काँप गई और रो पड़ी। कफ़ल ने औ़रत से पूछाः ''क्यों रो रही है? क्या मैंने तुझे मजबूर किया है?'' औ़रत ने कहाः ''तूने मजबूर तो नहीं किया लेकिन मैंने ज़िना कभी नहीं किया है।'' कफ़ल ने कहाः ''जब तूने ये काम कभी नहीं किया फिर इसके लिये क्यों आमादा (तैयार) हुई।'' औ़रत ने कहाः ''मुझे बच्चों की भूख और रोने चिल्लाने ने इस काम पर मजबूर किया है।'' ये सुनकर उसने औ़रत को छोड़ दिया और कहाः ''चली जा! ये दीनार भी तेरे हैं।'' फिर उसने क़सम खाई कि अल्लाह की क़सम! कफ़ल फिर कभी अल्लाह की ना–फ़रमानी नहीं करेगा। उसी रात उसका इन्तिक़ाल हो गया, सुबह को उसके दरवाज़े पर लिखा हुआ था कि अल्लाह तआ़ला ने कफ़ल की मग़फ़िरत फ़रमा दी है।[55]

मालूम हुआ कि सच्ची तौबा की बरकत से बड़े से बड़े गुनाह माफ़ हो जाते हैं।

---

[55] किताबुत्तव्वाबीन, पेजः 44

Scanned with CamScanner

एक फ़ाहिशा (बदकार औ़रत) की तौबा

ह़ज़रत ह़सन बसरी रह़मतुल्लाहि अ़लैहि (110 हिजरी) फ़रमाते हैं कि क़ौमे बनी इसराईल में एक बदकार औ़रत थी जिसको (दुनिया का) तिहाई हुस्न दिया गया था। वो सौ दीनार लेकर गुनाह के लिये तैयार हो जाया करती थी। उस पर एक आ़बिद (इ़बादतगुज़ार) की निगाह पड़ी तो आ़बिद के दिल में उसकी मुह़ब्बत बैठ गई। आ़बिद ने मेह़नत मज़दूरी के ज़रिये सौ दीनार जमा किये फिर औ़रत के पास आया और उसे पूरा क़िस्सा सुनाया कि मेरे दिल में तेरी मुह़ब्बत बैठ गई है, मेहनत मज़दूरी करके सौ दीनार जमा करके तेरे पास लाया हूँ। औ़रत ने उसे अन्दर आने की इजाज़त दे दी। उसके पास सोने का पलंग था, उस पर बैठकर आ़बिद से कहने लगी कि आ जाओ। जब वो आकर बैठा तो उसने अल्लाह तआ़ला के सामने खड़े होने के वक़्त (यानी क़ियामत के दिन) को याद किया तो उस पर कपकपी तारी हो गई और उससे कहने लगाः ''मुझे छोड़ दे मैं जाना चाहता हूँ और ये सौ दीनार रख ले।'' औ़रत ने कहाः ''तुझे क्या हो गया? तू तो अभी ये कह रहा था कि मुझे देखकर तेरे दिल में मेरी मुह़ब्बत पैदा हो गई थी और तूने मेह़नत मज़दूरी करके सौ दीनार जमा किये हैं, अब जबकि तू मुझ पर पूरा पूरा क़ादिर हो गया है तो अब कहता है मुझे छोड़ दे।'' आ़बिद ने जवाब दिया कि अल्लाह का ख़ौफ़ और अल्लाह के सामने खड़ा होना मुझे याद आ गया है, अब तमाम लोगों से ज़्यादा तू मुझे नफ़रत के क़ाबिल लग रही है। औ़रत कहने लगीः ''अगर तू सच्चा है तो तेरे अ़लावा मेरा कोई ख़ाविन्द नहीं होगा।''

Scanned with CamScanner

आ़बिद ने कहाः ''मुझे छोड़ दे मैं जाना चाहता हूँ।'' तवाइफ़ ने कहाः ''मैं तुझे इस शर्त पर छोड़ूँगी कि तू मुझसे शादी कर ले।'' लेकिन आ़बिद ने इन्कार कर दिया। औ़रत ने कहाः ''मैं तुझे इस शर्त पर छोड़ती हूँ कि अगर मैं तेरे पास पहुँच गई तो तू मुझसे निकाह़ कर लेगा।'' आ़बिद ने कहाः ''शायद ऐसा हो जाए।'' फिर आ़बिद शहर की तरफ़ निकल गया। औ़रत ने भी गुनाहों से तौबा की और अपने इलाक़े को छोड़कर आ़बिद के शहर पहुँच गई। लोगों से आ़बिद का घर और उसका नाम पूछा। लोगों ने उसे घर बता दिया। औ़रत के पहुँचने से पहले किसी ने आ़बिद से कहा कि फुलानी औ़रत तेरे पास आ रही है। जब आ़बिद ने उसे आता हुआ देखा तो एक सिसकी ली और मर गया। औ़रत ने मालूम किया कि इसका कोई क़रीबी रिश्तेदार है? लोगों ने बतायाः ''इसका एक भाई है जो फ़क़ीर आमदी है।'' औ़रत ने कहाः ''आ़बिद की मुह़ब्बत की वजह से उसके भाई से ही निकाह़ कर लेती हूँ।'' लिहाज़ा आ़बिद के भाई से निकाह़ कर लिया। अल्लाह तआ़ला ने उन दोनों से सात औलिया पैदा फ़रमाए।[56]

मालूम हुआ कि बड़े से बड़े गुनाह को अल्लाह तआ़ला तौबा के ज़रिये माफ़ फ़रमा देता है। लिहाज़ा अल्लाह की रह़मत से मायूस नहीं होना चाहिये बल्कि सुबह शाम तौबा करते रहना चाहिये।

[56] किताबुत्तव्वाबीन, ह़िस्साः 1, पेजः 44

Scanned with CamScanner

एक गुनहगार की तौबा

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में क़ौमे बनी इसराईल पर क़हत (सूखा) पड़ा, लोग जमा होकर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के पास आए और कहने लगेः ''ऐ कलीमुल्लाह! हमारे लिये अपने रब से बारिश की दुआ़ करें।'' हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम लोगों को लेकर एक मैदान में गए, उनकी तादाद सत्तर हज़ार से कुछ ज़्यादा थी। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने दुआ़ कीः ''ऐ अल्लाह! हम पर बारिश बरसा और हम पर अपनी रह़मत के दरवाज़े खोल दे, दूध पीने वाले बच्चों, चरने वाले जानवरों और झुकने वाले बूढ़ों की वजह से हम पर रह़म फ़रमा।'' मगर दुआ़ करने के बाद आसमान और ज़्यादा साफ़ हो गया और दिन ज़्यादा गर्म हो गया। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अ़र्ज़ कीः ''ऐ मेरे माबूद! अगर तेरे यहाँ मेरा मरतबा पुराना हो चुका है तो नबी–ए–उम्मी हज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिनको तू आख़िरी ज़माने में पैदा फ़रमाएगा उनके मरतबे की वजह से हम पर रह़म फ़रमा।'' अल्लाह तआ़ला ने मूसा अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ वह्य भेजी (यानी फ़िरिश्ते के ज़रिये पैग़ाम भेजा) तुम्हारा मरतबा मेरे यहाँ न पुराना हुआ है और न ही कम हुआ है लेकिन तुम्हारे दरमियान एक आदमी है जो चालीस साल से गुनाहों के साथ मेरा मुक़ाबला कर रहा है। लोगों में एलान कर दो वो तुम्हारे दरमियान से निकल जाए उसी की वजह से मैंने तुम पर बारिश रोक दी है। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अ़र्ज़ कीः ''ऐ मेरे माबूद! मैं कमज़ोर बन्दा हूँ और मेरी आवाज़ भी कमज़ोर है, ये सत्तर हज़ार से कुछ ज़्यादा हैं, मेरी आवाज़

Scanned with CamScanner

कहाँ तक पहुँचेगी?'' अल्लाह तआ़ला ने वह्य भेजीः ''आवाज़ लगाना आपका काम है और पहुँचाना मेरा काम।'' ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने खड़े होकर एलान कियाः ''ऐ चालीस साल से अल्लाह का मुक़ाबला करने वाले! तू हमारे दरमियान से निकल जा, तेरी वजह से हम पर बारिश रुकी हुई है।'' वो गुनाहगार बन्दा खड़ा हुआ, उसने दाएँ बाएँ देखा तो कोई न निकला फिर उसने यक़ीन कर लिया कि मैं ही इससे मुराद हूँ और अपने दिल में सोचा कि अगर इनके दरमियान से निकलता हूँ तो सबके सामने रुसवा होता हूँ और अगर इनके साथ बैठता हूँ तो ये लोग मेरी वजह से मह़रुम होते हैं। फिर उसने अपना सर गिरेबान में डाला और अपने कामों पर शर्मिन्दा होकर ये दुआ़ कीः ''ऐ मेरे माबूद! ऐ मेरे सरदार! मैंने चालीस साल से तेरी ना–फ़रमानी की, तूने मुझे ढील दी, अब मैं तेरा फ़रमाँबरदार बनकर तेरे पास आया हूँ, तू मेरी तौबा कुबूल फ़रमा।'' उसकी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि एक सफ़ेद बादल उठा जिसने मशकीज़ों के मुँह की तरह़ बारिश बरसाई। ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अ़र्ज़ कियाः ''ऐ अल्लाह! किसकी वजह से तूने हम पर बारिश नाज़िल फ़रमाई? ह़ालाँकि हममें से कोई भी नहीं निकला।'' अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः ''ऐ मूसा! जिसकी वजह से बारिश रोकी थी उसी की वजह से बारिश बरसाई है।'' ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अ़र्ज़ कियाः ''ऐ अल्लाह! ये फ़रमाँबरदार बन्दा मुझे दिखा दे।'' अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः ''मूसा जब वो मेरा ना–फ़रमान था तो मैंने उसे रुसवा नहीं किया तो अब जबकि वो मेरा फ़रमाँबरदार हो गया है तो मैं उसे कैसे रुसवा

Scanned with CamScanner

करुँ? ऐ मूसा! मैं चुगुलख़ोरों से नफ़रत करता हूँ और मैं ख़ुद चुगुलख़ोर बन जाऊँ ये कैसे हो सकता है?''[57]

एक दर्दअंगेज़ तौबा

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में एक शख़्स था जो अपनी तौबा पर कभी क़ाएम नहीं रहता था, जब भी तौबा करता उसे तोड़ देता यहाँ तक कि इस हाल में बीस साल गुज़र गए। अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ वह्य फ़रमाईः ''मेरे उस बन्दे को कह दो कि मैं उससे सख़्त नाराज़ हूँ।'' जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उस आदमी को अल्लाह का पैग़ाम दिया तो वो बहुत ग़मगीन हुआ और जंगलों की तरफ़ निकल गया। वहाँ जाकर बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अ़र्ज़ कीः ''ऐ रब्बे ज़ुल–जलाल! तेरी रह़मत जाती रही या मेरे गुनाहों ने तुझे दुख दिया? तेरी बख़्शिश के ख़ज़ाने ख़त्म हो गए या बन्दों पर तेरी निगाहे करम नहीं रही? तेरे अफ़्वो दरगुज़र (माफ़ी) से कौन सा गुनाह बड़ा है? तू करीम है, मैं बख़ील (कन्जूस) हूँ। क्या मेरा बुख़्ल (कन्जूसी) तेरे करम पर ग़ालिब आ गया है? अगर तूने अपने बन्दों को अपनी रह़मत से मह़रुम कर दिया तो वो किसके दरवाज़े पर जाएँगे? अगर तूने उन्हें राइन्द–ए–दरबार (दरबार का दुतकारा हुआ) कर दिया तो वो कहाँ जाएँगे? ऐ रब्बे क़ादिरो क़ह्हार! अगर तेरी बख़्शिश जाती रही और मेरे लिये अ़ज़ाब ही रह गया है तो तमाम गुनाहगारों का अ़ज़ाब मुझे दे दे, मैं उन पर अपनी जान कुरबान करता हूँ।'' अल्लाह तआ़ला ने मूसा

[57] किताबुत्तव्वाबीन, हिस्साः 1, पेजः 50

Scanned with CamScanner

अ़लैहिस्सलाम से फ़रमायाः ''जाओ और मेरे बन्दे से कह दो कि तूने मेरे कमाले कुदरत और अफ़्वो दरगुज़र की ह़क़ीक़त को समझ लिया है अगर तेरे गुनाहों से ज़मीन भर जाए तब भी मैं तुझे बख़्श दूँगा।''[58]

सौ आदमियों के क़ातिल की तौबा

ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी रदियल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः ''क़ौमे बनी इसराईल में एक आदमी ने निन्नान्नवे आदमियों को क़त्ल कर डाला फिर उसने मालूम करना चाहा कि इस वक़्त रुए ज़मीन का सबसे बड़ा आ़लिम कौन है? ताकि अपने गुनाहों की तौबा के बारे में मस्अला दरयाफ़्त करे। चुनान्चे लोगों ने एक राहिब की निशानदही की। उसने राहिब से कहाः ''मैंने निन्नान्नवे आदमियों को मौत के घाट उतारा है, क्या मेरे लिये तौबा की कोई सूरत है?'' राहिब ने कहाः ''नहीं।'' लिहाज़ा उसने राहिब को भी क़त्ल कर डाला। सौ की तादाद पूरी हो गई। फिर कुछ मुद्दत बाद उसने लोगों से फिर पूछा कि सबसे बड़ा आ़लिम कौन है? चुनान्चे एक आ़लिम के मुतअ़ल्लिक़ बताया गया, उसने आ़लिम से कहा कि मैं सौ आदमियों को क़त्ल कर चुका हूँ, क्या मेरी तैबा कुबूल हो सकती है? उस आ़लिम ने जवाब दियाः ''हाँ! तेरी तौबा कुबूल हो सकती है, फुलाँ इ़लाक़े में चले जाओ वहाँ कुछ लोग अल्लाह की इ़बादत में मसरुफ़ रहते हैं, तुम भी उनकी रफ़ाक़त (दोस्ती) में अल्लाह की इ़बादत में ज़िन्दगी गुज़ारो

[58] मुकाशफ़तुल कुलूब पेजः 144

Scanned with CamScanner

और अपने मुल्क की तरफ़ वापस न आना क्योंकि वो बहुत ही बुरी जगह है।'' वो आदमी चल दिया, जब आधे रास्ते पर पहुँचा तो इन्तिक़ाल हो गया। अब उसके मुतअ़ल्लिक़ रह़मत और अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों के दरमियान झगड़ा हो गया, रह़मत के फ़िरिश्तों का कहना था कि ये ताइब होकर (यानी तौबा करके) अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जे हो चुका था। अ़ज़ाब के फ़िरिशतों ने कहाः ''इसने तो कभी कोई नेक काम नहीं किया।'' चुनान्चे फ़ैसले के लिये एक फ़िरिश्ता इन्सानी शक्ल में आया और दोनों फ़रीक़ (पार्टी) ने उसको स़ालिस़ (फ़ैसला करने वाला) तसलीम कर लिया। उसने कहाः ''दोनों तरफ़ की ज़मीन नाप लो, जिस तरफ़ की मसाफ़त (राह) कम होगी उसी में इसे शामिल किया जाएगा।'' जब ज़मीन नापी गई तो जिस तरफ़ वो जा रहा था उसकी मसाफ़त कम निकली। इस बुनियाद पर रह़मत के फ़िरिश्तों ने उसकी रुह़ को अपने क़ब्ज़े में कर लिया। ह़ज़रत क़तादा फ़रमाते हैंः हमसे ह़ज़रते ह़सन ने बयान किया कि जब उसने देखा कि मौत आने लगी है तो उसने अपने आपको नेकों की बस्ती की तरफ़ घसीटा। बस इसी वजह से अल्लाह ने उसे नेकों की बस्ती के क़रीब और बुरे लोगों की बस्ती से दूर कर दिया।[59]

मालूम हूआ कि आदमी कितना ही गुनाहगार क्यों न हो अगर सच्चे दिल से तौबा करता है तो अल्लाह सुब्ह़ानहू व तआ़ला ज़रूर उसकी तौबा कुबूल फ़रमाता है इसलिये गुनाहगारों को मायूस होने के बजाय तौबा व इस्तिग़फ़ार करते रहना चाहिये।

---

[59] मुस्लिम, ह़दीसः 7184

Scanned with CamScanner

यहाँ तक जो वाक़ियात व हिकायात आपने पढ़ी हैं वो पिछली उम्मत के लोगों की थीं। अब इस उम्मत के गुनाहगारों की तौबा के वाक़ियात मुलाहज़ा फ़रमाएँ।

एक जवान की तौबा

हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हु एक मरतबा मदीना मुनव्वरा की गली से गुज़र रहे थे। आपने एक जवान को देखा जो कपड़ों के नीचे शराब की बोतल छुपाए चला आ रहा था। आपने पूछाः ''ऐ जवान! इस बोतल में क्या लिये जा रहा है?'' जवान बहुत शर्मिन्दा हुआ कि मैं कैसे कहूँ कि इस बोतल में शराब है? उस वक़्त उसने दिल ही दिल दुआ माँगीः ''ऐ अल्लाह! मुझे हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हु के रुबरु शर्मिन्दगी और रुसवाई से बचा ले, मेरे ऐब को ढाँप ले, मैं फिर कभी शराब नहीं पियूँगा।'' फिर उसने हज़रत उमर को जवाब दियाः ''अमीरुल मोमिनीन! ये सिरका है।'' आपने फ़रमायाः ''मुझे दिखाओ तो सही।'' चुनान्चे आपने देखा तो वो सिरका था।

ज़रा ग़ौर कीजिये! एक बन्दे के डर से सच्चे दिल से तौबा किया तो अल्लाह तआला ने उसकी शराब को सिरके में बदल दिया। इसी तरह अगर कोई गुनहगार अपने गुनाहों पर शर्मिन्दा होकर तौबा कर लेता है तो अल्लाह तआला उसकी ना–फ़रमानियों की शराब को फ़रमाँबरदारी के सिरके में बदल देता है। इसलिये बन्दे को चाहिये कि सच्चे दिल से तौबा व इस्तिग़फ़ार करता रहे।[60]

---

[60] मुकाशफ़तुल कुलूब, पेजः 76

Scanned with CamScanner

हज़रत हबीब अजमी की तौबा

हज़रत हबीब अजमी अलैहिर्रहमा बहुत अमीर आदमी थे और बसरा वालों को सूद पर क़र्ज़ा दिया करते थे। जब मक़रुज़ (क़र्ज़ लेने वाले) से क़र्ज़ का तक़ाज़ा करने जाते तो उस वक़्त तक न टलते जब तक क़र्ज़ वुसूल न हो जाता अगर किसी मजबूरी की वजह से क़र्ज़ वुसूल न होता तो क़र्ज़ लेने वाले से अपना वक़्त बरबाद करने का हरजाना वुसूल करते और उन पैसों से ज़िन्दगी गुज़ारते। एक दिन किसी के यहाँ वुसूली के लिये पहुँचे तो वो घर पर मौजूद नहीं था। उसकी बीवी ने कहा कि "न तो शौहर घर पर मौजूद हैं और न मेरे पास तुम्हारे देने के लिये कोई चीज़ है अलबत्ता मैंने आज एक भेड़ ज़ब्ह की है जिसका तमाम गोश्त ख़त्म हो चुका है, सर बाक़ी है, अगर तुम चाहो तो वो तुमको दे सकती हूँ।"

चुनान्चे आपने बकरी का सर ले लिया, घर पुहँचे और बीवी से कहा कि ये सर सूद में मिला है इसे पका डालो। बीवी ने कहाः "घर में न लकड़ी है और न आटा, भला मैं खाना किस तरह तैयार करुँ?" आपने कहाः "इन दोनों चीज़ों का भी इन्तिज़ाम मक़रुज़ों (यानी क़र्ज़ लेने वालों) से सूद लेकर करता हूँ" और सूद ही से ये दोनों चीज़ें ले आए। जब खाना तैयार हो चुका तो एक ज़रुरतमन्द ने आकर सवाल किया। आपने कहाः "तेरे देने के लिये हमारे पास कुछ नहीं है।" चुनान्चे साइल (माँगने वाला) मायूस होकर वापस चला गया। जब बीवी ने सालन निकालना चाहा तो हँडिया सालन के बजाय ख़ून से भरी थी। उसने शौहर को आवाज़ देकर

Scanned with CamScanner

कहाः "देखो! तुम्हारी कन्जूसी और बदबख़्ती से ये क्या हो गया?" आपको ये देखकर सबक़ मिला और बीवी को गवाह बनाकर कहा कि आज मैं हर बुरे काम से तौबा करता हूँ और ये कहकर मक़रुज़ लोगों से अस्ल रक़म लेने और सूद ख़त्म करने के लिये निकले। रास्ते में कुछ लड़के खेल रहे थे, आपको देखकर लड़कों ने आवाज़ें कसना शुरु कर दियाः "दूर हट जाओ ह़बीब सूदख़ोर आ रहा है, कहीं इसके क़दमों की ख़ाक हम पर न पड़ जाए और हम इस जैसे बदबख़्त न बन जाएँ।" ये सुनकर आप बहुत रन्जीदा हुए और ह़ज़रत ह़सन बसरी अ़लैहिर्रह़मा की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, उन्होंने आपको ऐसी नसीह़त फ़रमाई कि बेचैन होकर दोबारा तौबा की। वापसी में जब एक मक़रुज़ आपको देखकर भागने लगा तो फ़रमायाः "तुम मुझसे मत भागो, अब तो मुझको तुमसे भागना चाहिये ताकि एक गुनाहगार का साया तुम पर न पड़ जाए।" जब आप आगे बढ़े तो उन्हीं लड़कों ने कहना शुरु कियाः "रास्ता दे दो! अब ह़बीब तौबा करके आ रहा है कहीं ऐसा न हो कि हमारे पैरों की गर्द उस पर पड़ जाए और अल्लाह हमारा नाम गुनाहगारों में दर्ज कर ले।" आपने बच्चों की ये बात सुनकर अल्लाह से अर्ज़ किया कि "मौला! तेरी कुदरत भी अ़जीब है कि आज ही मैंने तौबा की और आज ही तूने लोगों की ज़ुबान से मेरी नेकनामी का एलान करा दिया।" उसके बाद आपने एलान करा दिया कि जो शख़्स मेरा क़र्ज़दार हो वो अपनी तह़रीर और माल वापस ले जाए। इसके अ़लावा आपने अपनी तमाम दौलत राहे ख़ुदा में लुटा दी फिर (नहरे) फ़ुरात के साह़िल (किनारे) पर एक इ़बादत ख़ाना

Scanned with CamScanner

तामीर करके उसमें इ़बादत में मशगूल हो गए और ये मामूल बना लिया कि दिन को इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये ह़ज़रत ख़्वाजा ह़सन बसरी अ़लैहिर्रह़मा की ख़िदमत में जाते और रात भर इ़बादत में मशगूल रहते। चूँकि कुरआन पाक का तलफ़्फ़ुज़ सही मख़रज से अदा नहीं कर सकते थे इस लिये आपको अ़जमी का ख़िताब दे दिया गया।[61]

ह़ज़रत मालिक बिन दीनार की तौबा

ह़ज़रत मालिक बिन दीनार से उनकी तौबा का सबब पूछा गया तो उन्होंने बताया कि "मैं पुलिस में था और बहुत शराब पीता था। मैंने एक ख़ूबसूरत बाँदी (गुलाम लड़की) ख़रीदी जो मेरे लिये अच्छी स़ाबित हुई। उससे मेरे यहाँ एक लड़की पैदा हुई, मुझे उससे बे–पनाह मुह़ब्बत थी। जब वो अपने क़दमों पर चलने लगी तो उसकी मुह़ब्बत मेरे दिल में और बढ़ गई, वो भी मुझसे बहुत मुह़ब्बत करती थी। जब मैं शराब पीने लगता तो वो आकर शराब गिरा देती थी। जब उसकी उ़म्र दो साल हुई तो उसका इन्तिक़ाल हो गया। मुझे उसकी मौत ने मरीज़ बना दिया। पन्द्रहवीं शाबान की रात थी और जुमा का दिन था, मैं नशे में चूर होकर सो गया, उस दिन इ़शा की नमाज़ भी नहीं पढ़ी थी। मैंने ख़्वाब में देखा कि जैसे क़ियामत क़ाएम हो गई है और सूर फूँका जा रहा है, क़ब्रें फट रही हैं और ह़श्र क़ाएम है और मैं भी लोगों के साथ हूँ। अचानक मैंने अपने पीछे सरसराहट मह़सूस की, पीछे मुड़कर देखा तो एक बहुत बड़ा काला अज़्दहा मेरे पीछे मुँह

[61] तज़किरतुल औलिया, पेजः 34

Scanned with CamScanner

खोले मेरी तरफ़ बढ़ रहा था। मैं उससे डर कर भागा। भागते हुए मैं एक साफ़ सुथरे कपड़े पहने हुए बुज़ुर्ग के पास से गुज़रा जिनके पास ख़ुशबू फैली हुई थी।

मैंने उन्हें सलाम किया, उन्होंने जवाब दिया तो मैंने कहाः "जनाब! मुझे इस अज़्दहे से बचाइये।" वो बुज़ुर्ग रोते हुए कहने लगेः "मैं कमज़ारे हूँ और ये मुझसे बहुत ताक़तवर है, मैं इस पर क़ाबू नहीं पा सकता लेकिन तुम जल्दी से भाग जाओ शायद अल्लाह किसी को तुमसे मिला दे जो तुम्हें इससे बचा ले।" तो मैं सीधा भागने लगा और वहाँ क़ियामत का मन्ज़र देखने लगा। मैं एक ऊँचाई पर चढ़ा तो वहाँ ज़बरदस्त आग थी, मैंने उसकी हौलनाकी को देखा और चाहा कि अज़्दहे से बचने के लिये इस आग में कूद जाऊँ मगर किसी ने चीख़कर कहाः "लौट जा! तू इस आग का अह्ल नहीं है।" मैं लौट आया लेकिन अज़्दहा मेरे पीछे था, मैं उसी बुज़ुर्ग के पास आया और उन्हें कहाः "जनाब! मैंने आपसे पनाह माँगी थी लेकिन आपने मुझे पनाह नहीं दी।" वो बुज़ुर्ग फिर मअ़ज़रत करके कहने लगेः "मैं कमज़ोर आदमी हूँ लेकिन तुम उस पहाड़ पर चढ़ जाओ वहाँ मुसलमानों की अमानतें हैं, हो सकता है कि तेरी भी कोई अमानत वहाँ हो जो तेरी मदद कर सके।" मैं उस पहाड़ पर चढ़ गया जो चाँदी से बना हुआ था, उसमें जगह जगह सूराख़ थे और सुर्ख़ सोने से बने हुए ग़ारों पर पर्दे पड़े हुए थे, जब मैं अज़्दहे से डरकर पहाड़ की तरफ़ भागा तो किसी फ़िरिश्ते ने ज़ोर से कहाः "पर्दे हटा दो।" तो पर्दे उठ गए और ताक़ खोल दिये गए फिर उन ताक़चों से चाँदी की रंगत जैसे चेहरे वाले बच्चे निकल आए और अज़्दहा

Scanned with CamScanner

भी मेरे क़रीब आ गया। अब मैं बड़ा परेशान हुआ। फिर बच्चे फ़ौज दर फ़ौज निकलना शुरु हुए। मैंने देखा कि मेरी बच्ची जो मर चुकी थी, वो भी निकली और मुझे देखते ही रोने लगीः "वल्लाह (ख़ुदा की क़सम!) मेरे वालिद।" फिर वो तेज़ी से कूदकर एक नूर के हाले में गई और दोबारा मेरे सामने नुमूदार हुई और अपने बाएँ हाथ से मेरा दायाँ हाथ पकड़ा और दायाँ हाथ अज़्दहे की तरफ़ बढ़ाया तो वो उल्टे पाँव भाग गया।

उसके बाद उसने मुझे बिठाया और मेरी गोद में आ बैठी और अपना सीधा हाथ मेरी दाढ़ी में फेरते हुए कहने लगीः

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ [62]

तर्जमाः क्या ईमान वालों के लिये अभी वो वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की याद के लिये झुक जाएँ।

मैंने कहाः "मेरी बच्ची! क्या तुम्हें कुरआन मालूम है?" उसने कहाः "हाँ! हम लोग आपसे ज़्यादा जानते हैं।" मैंने पूछाः "मुझे उस अज़्दहे के बारे में बताओ जो मुझे हलाक कर देना चाहता था?" उसने कहाः "वो आपके बुरे आमाल थे जिन्हें खुद आपने ताक़तवर बनाया था।" मैंने पूछाः "वो बुज़ुर्ग कौन थे?" बच्ची ने बतायाः "वो आपके अच्छे आमाल थे जिन्हें आपने इतना कमज़ोर कर दिया था कि वो आपके बुरे आमाल को दूर न कर सके।" मैंने पूछाः "मेरी बच्ची! तुम लोग इस पहाड़ में क्या करती हो?" उसने कहाः "हम मुसलमानों के

[62] पाराः 27, अलहदीद, आयतः 16

Scanned with CamScanner

बच्चे इस पहाड़ में रहते हैं और क़ियामत होने तक रहेंगे। हम इन्तिज़ार कर रहे हैं कि तुम कब हमारे पास आओ और हम तुम्हारी शफ़ाअ़त करें।'' मालिक बिन दीनार कहते हैं कि मैं ख़ौफ़ज़दा ह़ालत में बेदार हुआ और शराब फेंककर उसके बर्तन तोड़ दिये और अल्लाह से तौबा कर ली। ये वाक़िया मेरी तौबा की वजह बना।[63]

अ़ब्बासी शहज़ादे की तौबा

एक आदमी के घर की दीवार गिर गई उसे जल्द से जल्द दीवार बनवाने की फ़िक्र लाह़िक़ हुई। लिहाज़ा उसे बनवाने के लिये मज़दूर की तलाश में घर से निकला। चौराहे पर उसने मज़दूरों को देखा जो काम के इन्तिज़ार में बैठे थे। उनमें एक नौजवान भी था जो सबसे अलग थलग खड़ा था। उसके एक हाथ में थैला और दूसरे हाथ में हथौड़ा था। उस शख़्स का कहना है कि ''मैंने उस नौजवान से पूछाः ''तुम मज़दूरी करोगे?'' नौजवान ने जवाब दियाः ''हाँ!'' मैंने कहाः ''दीवार बनानी होगी।'' नौजवान कहने लगाः ''ठीक है! लेकिन मेरी शर्तें हैं, अगर तुम्हें मन्ज़ूर हों तो मैं काम करने के लिये तैयार हूँः पहली शर्त ये है कि तुम मेरी मज़दूरी पूरी अदा करोगे, दूसरी शर्त ये है कि नमाज़ के वक़्त मुझको नमाज़ पढ़ने से नहीं रोकोगे।'' मैंने उसकी शर्तें मान लीं और साथ लेकर घर आ गया फिर उसे काम बताकर किसी काम से बाहर चला गया। जब शाम के वक़्त वापस आया तो देखा कि उसने आ़म मज़दूरों से दोगुना काम किया है, मैंने ख़ुशी ख़ुशी

[63] किताबुत्तव्वाबीन, पेजः 129

Scanned with CamScanner

उसकी मज़दूरी अदा की और वो चला गया। दूसरे दिन फिर मैं उस नौजवान की तलाश में चौराहे पर गया लेकिन वो मुझे नज़र नहीं आया। मैंने दूसरे मज़दूरों से उसके बारे में दरयाफ़्त किया तो उन्होंने बताया कि वो हफ़्ते में सिर्फ़ एक दिन मज़दूरी करता है। ये सुनकर मैं समझ गया कि वो आ़म मज़दूर नहीं बल्कि कोई बड़ा आदमी है। मैंने उनसे उसका पता मालूम किया और उस जगह पहुँचा तो देखा कि वो ज़मीन पर लेटा हुआ था और उसे सख़्त बुख़ार था। मैंने उससे कहाः "अगर पसन्द करो तो मेरे साथ मेरे घर चलो और मुझे अपनी ख़िदमत का मौक़ा दो।" उसने इन्कार कर दिया फिर भी मेरे मुसलसल इसरार पर मान गया लेकिन एक शर्त रखी कि मुझसे खाने की कोई चीज़ नहीं लेगा। मैंने उसकी ये शर्त मन्ज़ूर कर ली और उसे अपने घर ले आया। वो तीन दिन मेरे घर रहा लेकिन उसने न तो किसी चीज़ का मुतालबा किया और न ही कोई चीज़ लेकर खाई। चौथे रोज़ उसके बुख़ार में शिद्दत आ गई तो उसने मुझे बुलाया और कहने लगाः "मेरे भाई! लगता है कि अब मेरा आख़िरी वक़्त क़रीब आ गया है लिहाज़ा जब मैं मर जाऊँ तो मेरी इस वसीयत पर अ़मल करनाः "जब मेरी रुह़ जिस्म से निकल जाए तो मेरे गले में रस्सी डालना और घसीटते हुए बाहर ले जाना और अपने घर के इर्द गिर्द चक्कर लगवाना और कहनाः लोगो! देख लो अपने रब की ना–फ़रमानी करने वालों का ये ह़श्र होता है।" शायद इस तरह़ मेरा रब मुझे माफ़ कर दे। फिर जब तुम मुझे गुस्ल दे चुको तो मुझे इन्हीं कपड़ों में दफ़्न कर देना फिर बग़दाद में ख़लीफ़ा हारुन रशीद के पास

Scanned with CamScanner

जाना और ये कुरआन मजीद और अंगूठी उन्हें देना और मेरा ये पैग़ाम भी देना कि: "अल्लाह से डरो! कहीं ऐसा न हो कि ग़फ़लत और नशे की ह़ालत में मौत आ जाए और बाद में पछताना पड़े फिर उससे कुछ ह़ासिल न होगा।" नौजवान मुझे वसीयत करने के बाद इन्तिक़ाल कर गया। मैं उसकी मौत के बाद काफ़ी देर तक आँसू बहाता रहा और ग़मज़दा रहा। फिर (न चाहते हुए भी) मैंने उसकी वसीयत पूरी करने के लिये एक रस्सी ली और उसकी गर्दन में डालने का इरादा किया तो कमरे के एक कोने से आवाज़ आई: "इसके गले में रस्सी मत डालना, क्या अल्लाह के वली के साथ ऐसा सुलूक किया जाता है?" ये आवाज़ सुनकर मेरे बदन पर कपकपी तारी हो गई। फिर उसके कफ़न व दफ़न का इन्तिज़ाम करने के लिये मैं चला गया। उसकी तदफ़ीन से फ़ारिग़ होने के बाद मैं उसका कुरआने पाक और अँगूठी लेकर ख़लीफ़ा के मह़ल की तरफ़ गया। वहाँ जाकर मैंने उस नौजवान का वाक़िया एक काग़ज़ पर लिखा और मह़ल के दारोग़ा से इस सिलसिले में बात करना चाहा तो उसने मुझे झिड़क दिया और अन्दर जाने की इजाज़त देने के बजाय अपने पास बिठा लिया। आख़िरकार! ख़लीफ़ा ने मुझे अपने दरबार में बुलाया और कहने लगा: "क्या मैं इतना ज़ालिम हूँ कि मुझसे डारेक्ट बात करने के बजाय ख़त का सहारा लिया?" मैंने अर्ज़ की: "अल्लाह तआ़ला आपका इक़बाल बुलन्द करे, मैं किसी ज़ुल्म की फ़रयाद लेकर नहीं आया बल्कि एक पैग़ाम लेकर ह़ाज़िर हुआ हूँ।" ख़लीफ़ा ने उस पैग़ाम के बारे में दरयाफ़्त किया तो मैंने वो कुरआन मजीद और अँगूठी निकालकर उसके सामने

Scanned with CamScanner

रख दी। ख़लीफ़ा ने इन चीज़ों को देखते ही कहाः ''ये चीज़ें तुझे किसने दी हैं?'' मैंने अ़र्ज़ कियाः ''एक गारा बनाने वाले मज़दूर ने.....''ख़लीफ़ा ने इन अलफ़ाज़ को तीन मरतबा दोहरायाः ''गारा बनाने वाला, गारा बनाने वाला.....और रो पड़ा।'' काफ़ी देर रोने के बाद मुझसे पूछाः ''वो गारा बनाने वाला अब कहाँ है?'' मैंने जवाब दियाः ''वो मज़दूर फ़ौत हो चुका है।'' ये सुनकर ख़लीफ़ा बेहोश होकर गिर गया और अ़स्र तक बेहोश रहा। मैं इस दौरान ह़ैरानो परेशान वहीं मौजूद रहा। फिर जब ख़लीफ़ा को कुछ इफ़ाक़ा हुआ (यानी होश आया) तो मुझसे दरयाफ़्त कियाः ''उसकी वफ़ात के वक़्त तुम उसके पास थे?'' मैंने हाँ में सर हिला दिया तो कहने लगाः ''उसने तुझे कोई वसीयत की थी?'' मैंने उसे नौजवान की वसीयत बताई और पैग़ाम भी दिया जो उस नौजवान ने ख़लीफ़ा के लिये छोड़ा था। जब ख़लीफ़ा ने ये सारी बातें सुनीं तो और भी ग़मगीन हो गया और अपने सर से इ़मामा उतार दिया, अपने कपड़े चाक कर डाले और कहने लगाः ''ऐ मुझे नसीह़त करने वाले! ऐ मेरे ज़ाहिद व पारसा! ऐ मेरे शफ़ीक़!''.....इस तरह़ के बहुत से अलक़ाबात ख़लीफ़ा ने उस मरने वाले नौजवान को दिये और मुसलसल आँसू बहाता रहा। ये सारा मामला देख मेरी ह़ैरानी व परेशानी में और भी इज़ाफ़ा हो गया कि ख़लीफ़ा एक आ़म मज़दूर के लिये इतना ग़मज़दा क्यों है? जब रात हुई तो ख़लीफ़ा ने मुझसे उसकी क़ब्र पर ले जाने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की तो मैं उसके साथ हो लिया। ख़लीफ़ा चादर में मुँह छिपाए मेरे पीछे पीछे चलने लगा, जब हम क़ब्रिस्तान पहुँचे तो मैंने एक क़ब्र की तरफ़ इशारा करके

Scanned with CamScanner

कहाः ''आ़ली जनाब! ये उस नौजवान की क़ब्र है।'' ख़लीफ़ा उसकी क़ब्र से लिपटकर रोने लगा फिर कुछ देर रोने के बाद उसकी क़ब्र के सिरहाने खड़ा हो गया और मुझसे कहने लगाः ''ये नौजवान मेरा बेटा था, मेरी आँखों की ठण्डक और मेरे जिगर का टुकड़ा था, एक दिन ये रक़्सो सुरुर (डान्स) की मह़फ़िल में गुम था कि मकतब में किसी बच्चे ने ये आयत तिलावत कीः

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ [64]

तर्जमाः क्या ईमान वालों के लिये अभी वो वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की याद के लिये झुक जाएँ।

जब उसने ये आयत सुनी तो अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ से थरथर काँपने लगा और उसकी आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई और ये पुकार पुकारकर कहने लगाः ''क्यों नहीं? क्यों नहीं?'' ये कहते हुए मह़ल के दरवाज़े से बाहर निकल गया। उस दिन से हमें उसके बारे में कोई ख़बर न मिली यहाँ तक कि आज तुमने उसकी वफ़ात की ख़बर दी।[65]

ह़ज़रत फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ की तौबा

ह़ज़रत सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ अ़लैहिर्रह़मा (187 हिजरी) बहुत नामवर मुह़द्दिस़ और मशहूर बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। ये पहले डाकू थे। एक मरतबा डाका डालने की ग़रज़ से किसी मकान की दीवार पर चढ़ रहे थे कि मकान मालिक कुरआन मजीद की तिलावत में मशगूल था, उसने ये आयत पढ़ीः

---

[64] पाराः 27, सूर–ए–ह़दीद, आयतः 16

[65] ह़िकायातुस्सालिह़ीन, पेजः 67, किताबुत्तव्वाबीन, पेजः 108

Scanned with CamScanner

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ [66]

तर्जमाः क्या ईमान वालों के लिये अभी वो वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की याद के लिये झुक जाएँ।

जूँही ये आयत आपके कान से टकराई, आप ख़ुदा के ख़ौफ़ से काँपने लगे और बे–इख़्तियार मुँह से निकलाः "क्यों नहीं मेरे परवरदिगार! अब इसका वक़्त आ गया है।" चुनान्चे रोते हुए दीवार से उतर पड़े और रात को एक सुनसान बे–आबाद खन्डरनुमा मकान में जाकर बैठ गए। थोड़ी देर बाद वहाँ एक क़ाफ़िला पहुँचा तो क़ाफ़िले के लोग आपस में कहने लगेः "रात को सफ़र मत करो, यहाँ रुक जाओ, फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ डाकू इसी तरफ़ रहता है।" आपने क़ाफ़िले वालों की बातें सुन लीं तो और ज़्यादा रोने लगे कि अफ़सोस! मैं कितना गुनाहगार और पापी हूँ कि मेरे ख़ौफ़ से क़ाफ़िले रात में सफ़र नहीं करते और घर में औ़रतें मेरा नाम लेकर बच्चों को डराती हैं। आप मुसलसल रोते रहे यहाँ तक कि सुबह हो गई फिर आपने सच्ची तौबा करके ये इरादा किया कि अब सारी ज़िन्दगी काबतुल्लाह की मुजावरी और अल्लाह तआ़ला की इ़बादत में गुज़ारूँगा। चुनान्चे आपने इ़ल्मे ह़दीस़ पढ़ना शुरु किया और थोड़े ही अ़र्से में साह़िबे फ़ज़ीलत मुह़द्दिस़ हो गए और ह़दीस़ का सबक़ देना शुरु कर दिया।[67]

---

[66] पाराः 27, सूर–ए–ह़दीद, आयतः 16

[67] औलिया–ए–रिजालुल ह़दीस़, पेजः 206

Scanned with CamScanner

गुनाहों से बचने का अनोखा नुस्ख़ा

हज़रत सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम अ़लैहिर्रह़मा (162 हिजरी) की ख़िदमत में एक नौजवान ह़ाज़िर हुआ और कहने लगाः "मैंने अपनी जान पर बहुत ज़ुल्म किया है, मुझे कुछ नसीह़त फ़रमाइये जो मुझे गुनाहों को छोड़ने में मददगार हो।" आपने इरशाद फ़रमायाः "अगर तुम पाँच बातों को अपना लो तो गुनाह तुम्हें कोई नुक़सान न देगा।" उसने आमादा होने का इज़हार किया तो आपने फ़रमायाः

"पहली बात ये है कि जब तुम गुनाह का इरादा करो तो अल्लाह तआ़ला का रिज़्क़ मत खाओ।" उस नौजवान ने कहाः "फिर मैं कहाँ से खाऊँगा? क्योंकि दुनिया की हर चीज़ अल्लाह की पैदा की हुई है।" आपने फ़रमायाः "क्या ये अच्छा लगेगा कि तुम अल्लाह तआ़ला का रिज़्क़ भी खाओ और उसकी ना–फ़रमानी भी करो?" उस नौजवान ने कहाः "नहीं।" फिर कहाः "अच्छा दूसरी बात बताएँ।"

आपने फ़रमायाः "दूसरी बात ये है कि जब तुम कोई गुनाह करने लगो तो अल्लाह के मुल्क से बाहर निकल जाओ।" वो कहने लगाः "ये बात तो पहली बात से भी ज़्यादा मुश्किल है क्योंकि पूरब से पश्चिम तक अल्लाह ही की मम्लिकत है।" आपने इरशाद फ़रमायाः "तो क्या ये मुनासिब है कि जिसका रिज़्क़ खाओ और जिसके मुल्क में रहो उसी की ना–फ़रमानी करो?" नौजवान ने नहीं में सर हिलाया और कहाः "तीसरी बात बताएँ।"

आपने फ़रमायाः "तीसरी बात ये है कि जब तुम कोई गुनाह करो तो ऐसी जगह करो जहाँ तुम्हें अल्लाह न देख

Scanned with CamScanner

सके।'' उसने कहाः ''हुज़ूर! ये कैसे हो सकता है? अल्लाह तआ़ला तो हर बात का जानने वाला है, कोई उससे कैसे छुप सकता है?'' आपने फ़रमायाः ''तो क्या ये अच्छा लगेगा कि तुम उसका रिज़्क़ भी खाओ, उसकी मम्लिकत में भी रहो और फिर उसी के सामने उसकी ना–फ़रमानी भी करो?'' नौजवान ने कहाः ''चौथी बात बयान फ़रमाएँ।''

आपने फ़रमायाः ''चौथी बात ये है कि जब मलकुलमौत तुम्हारी रुह़ क़ब्ज़ करने तशरीफ़ लाएँ तो उनसे कहनाः ''कुछ देर के लिये ठहर जाएँ ताकि मैं तौबा करके चन्द अच्छे आमाल कर लूँ।'' उसने कहाः ''ये तो मुम्किन ही नहीं है कि वो इस मुतालबे को मान लें।'' आपने फ़रमायाः ''जब तुम जानते हो कि मौत यक़ीनी है और उससे बचना मुम्किन नहीं तो छुटकारे की उम्मीद कैसे कर सकते हो?'' उसने कहाः ''पाँचवीं बात बताएँ।''

आपने फ़रमायाः ''पाँचवीं बात ये है कि जब ज़बानिया (यानी जहन्नम के दारोग़े) आएँ और तुझे जहन्नम की तरफ़ ले जाने लगें तो मत जाना।'' उसने अर्ज़ कीः ''वो नहीं मानेंगे और न मुझे छोड़ेंगे।'' तो आपने इरशाद फ़रमायाः ''तो फिर तुम नजात की उम्मीद कैसे रख सकते हो?''

वो नौजवान पुकार उठाः ''मुझे ये नसीह़त काफ़ी है, अब मैं अल्लाह तआ़ला से माफ़ी माँगता हूँ और तौबा करता हूँ।'' उसके बाद वो नौजवान मरते दम तक इ़बादत में मशगूल रहा।[68]

---

[68] किताबुत्तव्वाबीन, पेजः 168

Scanned with CamScanner

आज के दौर में इन बातों को पेशे नज़र रखा जाए और इनके मुताबिक़ अ़मल किया जाए तो इन्शाअल्लाह गुनाहों से बहुत ह़द तक ह़िफ़ाज़त हो सकती है।

किसी को दोज़ख़ी न कहिये

ह़ज़रत जुनदुब से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः "एक आदमी ने कहा कि अल्लाह की क़सम! फ़ुलाँ आदमी को अल्लाह तआ़ला नहीं बख़्शेगा। अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमायाः "वो कौन है जो मुझ पर क़सम खाता है कि मैं फ़ुलाँ को नहीं बख़्शूँगा? मैंने फ़ुलाँ को तो बख़्श दिया, हाँ! तेरे अ़मल ज़ब्त कर लिये।"[69]

इसी तरह़ एक और रिवायत ह़ज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "बनी इसराईल में दो दोस्त थे जिनमें आपस में गहरी मुह़ब्बत थी। उनमें से एक इ़बादत में लगा था और दूसरे के मुतअ़ल्लिक़ कहते हैं कि गुनहगार था। आ़बिद (इ़बादतगुज़ार) कहने लगा कि इन कामों से बाज़ आ जा जिनमें तू फँसा हुआ है। वो कहने लगाः "मुझे मेरे रास्ते पर छोड़ दो।" एक दिन आ़बिद ने उसे ऐसे गुनाह पर पाया जिसे उसने बहुत बड़ा जाना तो बोलाः "अल्लाह की क़सम! तुझे अल्लाह तआ़ला कभी नहीं बख़्शेगा और न जन्नत में दाख़िल करेगा।" अल्लाह तआ़ला ने उन दोनों के पास फ़िरिश्ता भेजा जिसने उन दोनों की रुह़ें क़ब्ज़ कर लीं। ये

[69] मुस्लिम, ह़दीसः 6848

Scanned with CamScanner

दोनों अल्लाह तआ़ला के पास जमा हुए तो अल्लाह तआ़ला ने गुनहगार से फ़रमायाः ''तू मेरी रह़मत से जन्नत में दाख़िल हो जा'' और दूसरे से फ़रमायाः ''तू मेरे बन्दे पर मेरी रह़मत रोक सकता है?'' अ़र्ज़ कियाः ''नहीं।'' फ़रमायाः ''ले जाओ इसे आग में (डाल दो)'' (मिश्कात शरीफ़)

मालूम हुआ कि आदमी कितना ही गुनाहगार क्यों न हो अल्लाह के लिये उसको बख़्श देना कोई मुश्किल काम नहीं है। लिहाज़ा किसी को जहन्नमी या दोज़ख़ी नहीं कहना चाहिये, कहीं ऐसा न हो कि किसी को जहन्नमी कहने की वजह से आदमी ख़ुद जहन्नम का ह़क़दार बन जाए।

अब नीचे चन्द ऐसी दुआ़एँ और ऐसे मुबारक कलिमात तह़रीर किये जा रहे हैं जिन्हें पढ़ना बाइ़स़े सआ़दत और जिनके ज़रिये तौबा करना निहायत आसान है। लिहाज़ा उन्हें भरपूर तवज्जो के साथ पढ़िये और ख़ूब से ख़ूब फ़ायदा उठाइये।

तौबा व इस्तिग़फ़ार की मक़बूल दुआ़एँ

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रदियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इस फ़रमान को एक मजलिस में सौ बार शुमार कर लेते थे, फ़रमाया करते थेः

''ऐ अल्लाह! मुझे बख़्श दे, मेरी तौबा कुबूल फ़रमा, यक़ीनन तू तौबा कुबूल फ़रमाने वाला, बख़्शने वाला है।''

जब हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ये दुआ़ पढ़ा करते थे तो हम मुसलमानों को भी ये दुआ़ याद कर लेनी चाहिये, शायद अल्लाह तआ़ला के प्यारे मह़बूब की प्यारी ज़ुबान से

Scanned with CamScanner

निकले हुए कलिमात के ज़रिये ही तौबा करना हमारी मग़फ़िरत और बख़्शिश का सबब बन जाए।

साहिबे हिस्ने हसीन ने इस्तिग़फ़ार के ये अल्फ़ाज़ तहरीर फ़रमाए हैं: ''रब्बिग़फ़िरली व तुब अलैया इन्न–क अन्तत्तव्वाबुर्रहीम''

ये कलिमात कुरआने करीम की इस आयत के मुताबिक़ हैं: وَتُبْ عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ [70]

इसी तरह एक और आयत में इरशादे रब्बानी है:

فَتَلَقّٰٓى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ [71]

एक हदीस़ शरीफ़ में हज़रत आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यूँ फ़रमाया करते थे: ''इलाही! मुझे उन लोगों में से बना दे जो नेकियाँ करें तो ख़ुश हो जाएँ और गुनाह करें तो माफ़ी माँग लें।'' (इब्ने माजा, बैहक़ी)

एक और हदीस़ में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कभी कभी सिर्फ़ अस्तग़फ़िरूल्लाह ही पढ़ा करते थे। ये बहुत ही मुख़्तसर इस्तिग़फ़ार है, कम से कम हमें यही पढ़ने की आदत डाल लेनी चाहिये।

हज़रत बिलाल बिन यसार बिन ज़ैद से रिवायत है कि उनके दादा ने नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते सुना: जो ये पढ़ा करे उसकी बख़्शिश कर दी जाएगी अगरचे वो मैदाने जिहाद से भागने का रास्ता

---

[70] सूर–ए–बक़रा, आयतः 128

[71] सूर–ए–बक़रा, आयतः 38

Scanned with CamScanner

इख़्तियार कर चुका हो: ''मैं माफ़ी माँगता हूँ उस अल्लाह से जो अ़ज़मत वाला है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, वो ज़िन्दा है, क़ाएम रहने वाला है और उसकी बारगाह में तौबा करता हूँ।''[72]

जिहाद से भागना अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ा गुनाह है लेकिन ज़रा सोचिये कि इस्तिग़फ़ार की बरकत से अल्लाह तआ़ला ऐसा बद–तरीन गुनाह भी बख़्श देता है। इसी तरह़ एक और ह़दीस़ में है: ''जो शख़्स रात को सोते वक़्त तीन दफ़ा इन कलिमात के ज़रिये अल्लाह तआ़ला से तौबा व इस्तिग़फ़ार करे तो अल्लाह तआ़ला उसके सब गुनाह माफ़ फ़रमा देगा अगरचे वो समन्दर की झाग के बराबर (बेशुमार) ही क्यों न हों।'' एक और रिवायत में तीन मरतबा के बजाय पाँच मरतबा पढ़ने का ज़िक्र आया है।

सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार

ह़ज़रत शद्दाद बिन औस रदियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: ''इस्तिग़फ़ार का सरदार ये है कि तुम कहो: ''इलाही तू मेरा रब है, तेरे सिवा कोई इबादत के लाएक़ नहीं, तूने ही मुझे पैदा किया है और मैं तेरा ही बन्दा हूँ और तेरे अ़ह्दो पैमान और तेरे वादे पर अपनी ताक़त के मुताबिक़ क़ाएम हूँ। मैं तुझसे अपने किये हुए (कामों) के गुनाह से पनाह माँगता हूँ, तेरी नेमतें मुझ पर हैं उनका तेरे सामने एतराफ़ करता हूँ और अपने गुनाहों का भी इक़रार करता हूँ, तू मेरे गुनाह बख़्श दे इसलिये कि तेरे सिवा कोई गुनाह नहीं बख़्श सकता।''

---

[72] तिर्मिज़ी, पेज: 26

Scanned with CamScanner

हुज़ूरे अकरम रह़मते आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जो मुकम्मल यक़ीन के साथ दिन में ये पढ़ ले फिर उसी दिन शाम से पहले मर जाए तो वो जन्नती होगा और जो दिल के यक़ीन के साथ रात में पढ़ ले फिर सुबह़ से पहले मर जाए तो वो जन्नती होगा।[73]

जन्नत का अनमोल ख़ज़ाना

ह़ज़रत अबू मूसा अशअ़री रदियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है, वो कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः क्या मैं तुम्हें जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाने के बारे में न बता दूँ? मैंने कहाः वो क्या? फ़रमायाः वो ''वला कुव्व–त इल्ला बिल्लाह'' है।[74]

अल्लाह के पसन्दीदा कलिमात

ह़ज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अ़न्हु से मरवी, वो कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः ''दो कलिमे अल्लाह को बहुत ही मह़बूब हैं, ज़ुबान पर हल्के हैं (यानी उन कलिमों का पढ़ना बहुत ही आसान है) और अ़मल के तराज़ू पर बहुत ही भारी हैं (वो दो कलिमे ये हैं) सुब्ह़ानल्लाहि व बिह़म्दिही, सुब्ह़ानल्लाहिल अ़ज़ीम''[75]

लिहाज़ा इन कलिमात का ज़्यादा से ज़्यादा विर्द करके हमें अल्लाह को राज़ी करने की कोशिश करनी चाहिये।

---

[73] बुख़ारी, ह़दीसः 6306
[74] मुस्लिम, ह़दीसः 7039
[75] बुख़ारी, ह़दीस 7563

Scanned with CamScanner

ऑल इण्डिया तब्लीग़े सीरत, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

बंगाल की सरज़मीन पर तह़रीक ऑल इण्डिया तब्लीग़े सीरत तक़रीबन 1971 ई0 से मस्लके अह्ले सुन्नत व जमाअ़त की फ़िक्र और नज़रिये को बढ़ावा देने के लिये रहनुमा–ए–अह्ले सुन्नत, इमामुत्तारिकीन, सिराजुस्सालिकीन, हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत अ़ल्लामा शाह मुह़म्मद ह़बीबुर्रह़मान क़ादिरी हाशिमी अ़लैहिर्रह़मा के ख़लीफ़ा ह़ज़रत ह़ाजी मुद्दस्सिर ह़ुसैन ह़बीबी साह़ब क़िब्ला की सर–बराही में दीनी ख़िदमात अन्जाम दे रही है।

मक़सद

मुसलमानों में मज़हबी रूजह़ान पैदा करना, उन्हें फ़र्ज़ व वाजिब की तरग़ीब देना।

दिलों में रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैरवी व इश्क़ का जज़्बा बेदार करना।

मुसलमानों के दरमियान इत्तिह़ाद व इत्तिफ़ाक़ की राह हमवार करना।

स्कूलों में पढ़ने वाले छोटे बच्चों, नौजवानों और कारोबार से जुड़े हुए या माज़ूर हो चुके उ़म्र को पहुँचे हुए लोगों के लिये दीनी तालीम का इन्तिज़ाम करना।

इस्लाम और मुसलमानों के तअ़ल्लुक़ से जो ग़लतफ़हमियाँ पैदा की जा रही हैं उनका सुबूतों की रोशनी में माक़ूल जवाब देना।

आ़म–फ़ह्म ज़ुबान में आ़म लोगों के लिये मज़हबी किताबें छापना।

जगह जगह दीनी व मज़हबी मज्लिसें करना।

क़ुदरती आफ़तों या फ़सादों के सबब तबाह–ह़ाल लोगों की मदद करना।

अल्लाह के करम से ये काम तीन डिपार्टमेंट

1– तालीम, 2– तब्लीग़ और 3– किताबों की पब्लिशिंग के ज़रिये अन्जाम दिये जा रहे हैं।

Published by

MADINATUL ULOOM INSTITUTE, TOPSIA

ALL INDIA TABLEEGH-E-SEERAT, WEST BENGAL (INDIA)
6, Taltalla Lane, Kolkata - 700014, Mobile :09830367155

Email Us : tableegh.e.seerat@gmail.com
info.tableeghseerat@gmail.com
Visit Us : www.tableeghseerat.com

Subscribe Us for Free E-News Letter at www.tableeghseerat.com
Join Us : TableeghSeerat Group at Facebook
https://www.facebook.com/groups/TableeghSeerat

Created by : Digital Graphics, Mob. 9830829976

Scanned with CamScanner